❖ वर्ष 49 ❖ अंक 12 ❖ दिसम्बर 2022

₹ 15/-

# हँसती दुनिया

# हँसती दुनिया

● वर्ष 49 ● अंक 12 ● दिसम्बर 2022 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : राज कुमारी ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-110009 हेतु एच.टी. मीडिया लिमिटेड, प्लॉट न. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-201 306 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 से प्रकाशित किया।

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र



Phone : 011-47660200
Fax : 01127608215
E-mail : editorial@nirankari.org
Website : www.nirankari.org


*Available on Website*

## सदस्यता शुल्क

| देश | 1 वर्ष | 3 वर्ष | 5 वर्ष | 11 वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| भारत/नेपाल | ₹ 150 | ₹ 400 | ₹ 700 | ₹ 1500 |
| यू.के. | £ 15 | £ 40 | £ 70 | £ 150 |
| यूरोप | € 20 | € 55 | € 95 | € 200 |
| अमेरिका | $ 25 | $ 70 | $ 120 | $ 250 |
| कनाडा/आस्ट्रेलिया | $ 30 | $ 85 | $ 140 | $ 300 |

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

## स्तम्भ


4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
12. चित्रकथा
20. पहेलियां
32. क्या आप जानते हैं?
34. किट्टी
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

# हँसती दुनिया

## कविताएं


7. दो बाल कविताएं
: महेन्द्र सिंह शेखावत

19. ऐसा काम न करना
: राजकुमार जैन 'राजन'

19. समय की कीमत
: हरजीत निषाद

27. दो बाल कविताएं
: राजेन्द्र निशेश

33. पर्यावरण संरक्षण
: शंकरलाल माहेश्वरी

39. हमारा सौरमंडल
: अमृत 'हरमन'

39. प्यारी धरती
: डॉ. विजय प्रकाश

47. समय
: राजेश चौधरी


## विशेष/लेख


10. क्या होता है स्पेस सूट?
: विद्या प्रकाश

16. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
: कैलाश जैन

21. मेहनती चींटियां
: कमल सोगानी

22. क्या है ...
: किरणबाला

26. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमण्डीलाल अग्रवाल

28. भारत का राष्ट्रीय पशु ...
: डॉ. परशुराम शुक्ल

42. गुणों की खान : आंवला
: परिधि जैन

46. टेलर बर्ड
: फेनम सोगानी


## कहानियां


8. दिया और मोमबत्ती
: विजय जी. खत्री

18. प्रेरणा
: पुष्कर द्विवेदी

23. मोती जुगनू
: कल्पनाथ सिंह

31. समझदारी से मिलती है सफलता
: कमल सोगानी

40. कहानी चीन की विशाल दीवार की
: नीलम ज्योति

# धन्यवाद दिसम्बर

हर वर्ष दिसम्बर अपने समय पर आकर बता देता है कि मैं तो हर वर्ष आता हूँ और आता रहूँगा। यह सूचना नववर्ष के पहले दिन ही मिल जाती है कि नववर्ष भी दिसम्बर में समाप्त हो जाएगा। हम भी हर वर्ष मन्थन अवश्य करते हैं कि मैंने पूरे वर्ष में क्या-क्या किया और क्या नहीं कर पाए? कई बार हम कार्यों में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि हम जो पाना चाहते हैं वह तो अक्सर पा ही लेते हैं परन्तु उसके साथ-साथ कुछ पहलू आधे-अधूरे भी छूट जाते हैं। जिनका हमें पता भी नहीं चलता।

एक बार एक व्यक्ति ने अपने चार पुत्रों को वर्ष के आरम्भ में कहा कि तुम अमुक जंगल में एक अमुक वृक्ष की जानकारी लेकर आओ और बताओ कि वह कैसा है? इसके लिए उस व्यक्ति ने एक वर्ष का समय दिया। जिस भी पुत्र को वर्ष में जब-जब भी समय मिला, वह वहाँ गया और वर्ष के अन्त में वे अपने पिता को बताने के लिए आतुर भी थे। जैसे ही उस व्यक्ति ने अपने चारों पुत्रों से जानकारी ली तो पहले ने कहा– उस वृक्ष को वृक्ष भी नहीं कह सकते क्योंकि वह तो एकदम ठूठ है, वह तो बेकार है। किसी काम का नहीं। दूसरे पुत्र ने कहा– मैंने देखा कि वृक्ष में नये-नये पत्ते कोमलता का एहसास दे रहे थे और सुन्दर भी लग रहे थे। तीसरे बेटे ने कहा– वह वृक्ष तो फूलों से भरा हुआ था। मन्द-मन्द खुश्बू दिल को भा रही थी और चौथे पुत्र ने कहा– वह वृक्ष तो प्रकृति की सुन्दरतम देन है। उसमें तो बहुत से फल भी लगे हुए थे और आने वाले राहगीरों की भूख भी मिटा रहे थे।

एक ही वृक्ष और उसको जिसने जिस समय और जिस रूप में देखा उसको केवल उतना ही दिखाई दिया और वह उसी को अपनी धारणा में समेटकर निर्णय करता रहा। चारों पुत्रों का विवरण एवं धारणा एक-दूसरे से अलग होते हुए भी थी तो उसी एक वृक्ष की क्योंकि सभी अलग-अलग समय और अलग-अलग मौसम में जाकर आए थे।

साथियों! अक्सर ऐसा होता है कि हम किसी को उस समय मिलते हैं जब वह किसी को क्रोध कर रहा है तो हम उसे क्रोधी मान लेते हैं परन्तु किसी और ने उन्हें सबसे केवल प्यार से बात करते देखा है तो हम उसे शीलवान कह देते हैं। किसी से कोई अन्जाने में गलती हो जाए तो उसे बेईमान, कामचोर इत्यादि की उपाधि भी दे देते हैं।

इसी प्रकार हमें भी देखना है कि वर्षभर जब भी मैंने क्रोध किया क्या वह वास्तव में क्षणिक क्रोध था या एक आदत; या फिर दिखावा था। इसी प्रकार प्यार को हम कहीं दिखावे का साधन मान बैठते हैं कि इस तरह कोई हम अपना काम निकलवा सकते हैं या गलती भी करते हैं तो कह देते हैं अन्जाने में हो गई।

कहीं हम भी सभी को आधे-अधूरे ज्ञान से तो नहीं देख रहे और अपना समय और ऊर्जा को बेकार तो नहीं कर रहे। वर्षभर में हमने अगर किसी के प्रति भी कोई धारणा बनाई है तो पहले पूरी तरह उस व्यक्ति के दृष्टिकोण को अवश्य जान लें। इसी तरह अन्य लोग भी हमारे प्रति भी इसी तरह की धारणा बना लेगें। हमारी मानसिकता में सकारात्मकता के साथ-साथ प्रेम भाव और पवित्रता होनी चाहिए। जैसा हम चाहते हैं दूसरों से उसे पहले अपनी जीवन शैली में अपनाना होगा फिर हमारा दिसम्बर हमेशा नववर्ष ही होगा। हर वर्ष हमें अपना आंकलन करने के लिए धन्यवाद दिसम्बर।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ :

# सम्पूर्ण अवतार बाणी

## पद संख्या 265

बिन जाणे निरंकार प्रभु नूं जनम अकारथ जाणा ए।
माया विच ग़लतान बन्दे दा धृग पीणा धृग खाणा ए।
पापां नाल इकट्ठे कीते धन दा झूठा माणा ए।
झूठ पसारा सच कर मन्नें झूठा पेटा ताणा ए।
नाम बिना कुझ नाल नहीं जांदा अंत जीव पछतांदा ए।
कहे अवतार मैं गुर तों वारी जो एह रब मिलांदा ए।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि निरंकार-प्रभु को जाने बिना बहुमूल्य मानव जन्म व्यर्थ चला जाता है। संसार में आकर इन्सान माया के पीछे भागने में ही अपना पूरा जीवन लगा देता है। वह भौतिक पदार्थों की प्राप्ति के लिए अपनी सारी ऊर्जा झोंक देता है। यह सब कुछ करने में वह इतना ज्यादा उलझ जाता है कि उसके मन में निरंकार-प्रभु को पाने की कोई इच्छा ही नहीं जागती। माया में गलतान रहने वाले, दिन-रात इसी में उलझे रहने वाले मानव का खाना-पीना सब धृगाकार है, निंदनीय है। जब तक कि वह प्रभु-परमात्मा को जानने, मानने और इसका हो जाने का भाव अपने मन में नही लाता, उसका हर कार्य व्यर्थ है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि धन इकट्ठा करने में इन्सान इतना ज्यादा फंस जाता है कि वह किसी का हक दबाने, किसी को अकारण ही पीड़ा पहुँचाने या उसे प्रताड़ित करने में संकोच नहीं करता। वह अनेकों पाप कर्म करके धन इकट्ठा करता है और फिर उसका झूठा अहंकार करता है। वह झूठ के इस पसारे को सच मान बैठता है और जीवनभर इसी झूठ के ताने-बाने में उलझा रहता है। जिस प्रकार मकड़ी जाल बुनती है और छोटे-छोटे कीट-पतंगों के उस जाल में फंसने की प्रतीक्षा करती है ताकि वह उनका शिकार कर सके। एक दिन उसी जाल में फंसकर वह स्वयं भी समाप्त हो जाती है। इसी तरह प्रभु-परमात्मा की जानकारी के बगैर इन्सान माया के झूठे ताने-बाने में उलझकर अपना जीवन नष्ट कर लेता है।

बाबा अवतार सिंह जी मानव को इस महारोग का उपचार बताते हुए कह रहे हैं कि सत्गुरु से मिलकर इस प्रभु, इस नामी को जान लो क्योंकि संसार से जाने वाले के साथ नाम के सिवाय कुछ भी साथ नहीं जाता। तिनका-तिनका करके जोड़ी गई उसकी समस्त माया, धन-दौलत, महल माड़ियां सब यही रह जाते हैं। इसलिए ऐसे गुरु को ढूढ़ो जो तुम्हें प्रभु से मिला दे और उस पर बलिहार जाओ। इन्सान ने अगर यह कार्य समय रहते कर लिया तो प्रंशसा का पात्र बनता है। अन्यथा अन्त में पछताने के सिवाय कुछ हाथ नहीं आता। अतः हे मानव! तुम सत्गुरु की शरण में आकर अपना जीवन सफल कर लो।

भावार्थ : हरजीत निषाद

# अनमोल वचन

★ सत्संग का महत्व युगों-युगों से सन्तों ने समझाया है कि जब सत्संग, सेवा और सुमिरण के ऊपर आधारित जीवन होता है तो इस प्रभु-परमात्मा की जानकारी प्राप्त करके यह जीवन भक्तिमय हो जाता है।

★ हम जैसा संग करते हैं वैसा ही रंग लग जाता है। फूलों के बगीचे से निकलेंगे तो खुश्बू का आनंद ही मिलेगा। रंगों से कोई चित्र बनाएंगे तो रंग अवश्य ही हाथ पर भी लगेगा। आटा गूंधते वक्त हाथ में आटा ही लगेगा। ऐसे ही यदि जब हम बुराई का संग करेंगे तो वैसा ही प्रभाव हमारे जीवन में भी आ जायेगा।

★ आत्मा को परमपिता-परमात्मा से जोड़ते ही विचारों में परिवर्तन आता है। ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति द्वारा ही भ्रम का नाश होता है तथा हमारी विचारधारा में विशालता आती है।

★ सेवा की भावना पूर्ण समर्पण वाली होनी चाहिए। सेवा तभी सार्थक होती है जब आदेशानुसार एवं मन को पूर्णतः समर्पित करके की जाती है। सेवा केवल कार्य रूप में नहीं बल्कि भाव से की जाती है।

★ जब भी हमारे अन्दर क्रोध जैसा विकार उत्पन्न होता है वह पहले हमारा नुकसान करता है।

★ जब भी गुरसिख को प्रभु की अभिन्न अंग संगतों का अहसास कम हो जाता है तब ही भक्त से गलती होती है। परमात्मा का अहसास हमें पल-पल गलती से बचाता है।

★ पेड़ छाया, फूल और फल देते हैं। पेड़ को उसके व्यवहार के बारे में कहना नहीं पड़ता परन्तु मनुष्य को ही कहा जाता है कि मनुर्भवः।

**– सत्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज**

★ भक्त एक खिले फूल की भाँति होता है और भक्ति उसकी महक है।

★ इन्सानों से समाज बनता है। इन्सान सुधरेगा तो समाज सुधरेगा।

★ सूरज की रोशनी का लाभ वही लेता है जिसकी आँखें हैं।

★ एक सच्चा भक्त सत्य को अपनाकर इन्सानियत की बुलन्दियों तक पहुँच जाता है।

**– बाबा हरदेव सिंह जी**

★ अच्छा स्वभाव और अच्छी समझ जीवन के दो सर्वोत्तम वरदान हैं।

★ यह जरूरी नहीं कि हर अच्छी चीज अच्छी जगह ही मिले।

★ जो दूसरे की सुख-सम्पति देखकर प्रसन्न होता है, वह भाग्यवान पुरुष है।

★ पैर में मोच और छोटी सोच इन्सान को कभी आगे बढ़ने नहीं देती।

★ मौन रहना ही क्रोध को वश में करने का सबसे सटीक उपाय है।

★ हारना सबसे बुरी विफलता नहीं है बल्कि कोशिश नहीं करना ही सबसे बड़ी विफलता है।

★ हर मनुष्य का सबसे पहला और सबसे बड़ा धर्म इन्सानियत होता है।

★ हर सुबह उठो और भगवान का शुक्रिया करो जिसने एक और सुबह दी है।

★ ज्ञान वो दीया है जो जीवन में प्रकाश फैलाता है जिसके आलोक से जीवन में उजाला हो जाता है।

**– सूक्तियां**

**संकलन : रीटा**

दो बाल कविताएं : महेन्द्र सिंह शेखावत

# अच्छे बच्चे

अच्छे बच्चे जो होते हैं,
आज्ञाकारी वो होते हैं।
मात-पिता का कहना माने,
अच्छे बीज वही बोते हैं।।

करते परिश्रम रात-दिन वो,
व्यर्थ समय न कभी खोते है।
विनम्रता का बाना पहने,
आदरभावी वो होते हैं।।

करते सहायता सबकी वो,
जो बड़े सहाई होते हैं।
नहीं किसी का करे अनादर,
सबके ही प्यारे होते हैं।।

## सदा बड़ों का
# आदर करना

कर्म से कभी न जी चुराना
सीख कहीं से भी तुम पाना,
आलस कर ना समय गंवाना
बीता समय कभी ना आना।

बड़ा कीमती एक-एक पल
जो खोया तो फिर पछताना,
मिथ्या भाषण कभी न करना
सत्य का साथ सदा निभाना।

सदा बड़ों का आदर करना
आज्ञा लेना शीश झुकाना,
कभी बुराई तुम मत करना
सत्य मार्ग पर कदम बढ़ाना।

कहानी : विजय जी. खत्री

# दिया और मोमबत्ती

एक नन्हा दिया हर रोज खिड़की से बाहर झांकता रहता। सुबह में जब सूरज उगता तो चारों ओर प्रकाश फैल जाता। पंछी चहचहाकर सूरज का स्वागत करते, प्रकृति झूम उठती।

वह हर रोज सूरज की ओर देखकर निराश हो जाता और सोचता– मेरा कद कितना छोटा है। मैं सूरज की तरह सबको प्रकाश और ऊर्जा नहीं दे सकता। सूरज के आगे मेरा कोई अस्तित्व नहीं है। क्या मुझे इसी तरह ही जीवन बिताना पड़ेगा? वह दिन कब आएगा जब मैं सूरज की तरह जगमगाऊंगा और सब मेरा भी स्वागत करेंगे।

उसे रोज निराश होते देख मोमबत्ती ने उसका कारण पूछा। नन्हे दिये ने कहा, ''सूरज सारे जग को भरपूर प्रकाश और ऊर्जा देता है। हर रोज पृथ्वी के कोने-कोने से अंधकार को दूर भगा देता है और मैं कितना छोटा हूँ। मैं सूरज जैसा काम केसे कर पाऊंगा? मैं कितनी भी कोशिश करता रहूंगा तो भी सूरज की तरह सबको प्रकाश व ऊर्जा नहीं दे सकूंगा। शाम के वक्त अंधेरा अपना प्रभाव दिखाता है तो मेरी चिंता बढ़ जाती है।''

मोमबत्ती ने उसे समझाते हुए कहा, ''अरे नन्हे दिये, तुम बेकार ही चिंता कर रहे हो। प्रकाश और अंधकार, सुख और दुख प्रकृति के नियम हैं। हम इन नियमों को बदल तो नहीं सकते। दिन के प्रकाश के बाद अंधकार का सामना भी करना पड़ता है। तुम भले ही सूरज की तरह जगमगाकर पृथ्वी के कोने-कोने में प्रकाश न फैला सको मगर उजाला करके किसी की मदद तो कर सकते हो। अंधकार में किसी राह से भटके हुए का मार्गदर्शन तो कर सकते हो।''

नन्हे दिये ने फिर निराश स्वर में कहा, ''मैं प्रयत्न तो बहुत करता हूँ। मगर मेरी कोशिश नाकाम हो जाती है। मैं सिर्फ इस आंगन को ही प्रकाशित कर सकता हूँ। सूरज की तरह सारे जग को नहीं। क्या मेरा जीवन ऐसे ही समाप्त हो जाएगा? क्या मैं कभी भी सूरज की तरह महान नहीं बन पाऊंगा?''

मोमबत्ती ने कहा, ''तुम भले ही सूरज न बन सको, मगर सूरज का प्रतीक तो बन सकते हो। भले ही तुम सूरज की तरह ऊर्जा नहीं दे सकते, मगर अंधकार से लड़ने की उम्मीद तो दे सकते हो। तुम चाहे सूरज की तरह भरपूर प्रकाश न दे सको, मगर उजियारा कर किसी का आंगन रोशन तो कर सकते हो।''

नन्हा दिया मोमबत्ती की बात सुन तो रहा था। मगर अंदर ही अंदर खुद को तुच्छ समझकर दु:खी हो रहा था। मोमबत्ती ने फिर से उसे सांत्वना देते हुए कहा, ''हम चाहे कोई बड़ा कार्य न कर सके। मगर कोई छोटा कार्य अवश्य कर सकते हैं। ईश्वर ने सबको कोई न कोई काम सौंपा हुआ है। हम भले ही सूरज की भांति सारी पृथ्वी को प्रकाश न दे सके। मगर किसी एक

घर से भी अंधेरा दूर भगा तो सकते हैं। सूरज की अनुपस्थिति में हम राह बताकर किसी की मदद तो कर सकते हैं।''

मोमबत्ती की बात सुनकर नन्हे दिये की चिंता कुछ कम हुई। कुछ दिन बाद दिवाली का त्योहार आया। अंधकार से भरी अमावस की रात। लेकिन आज सबको दिन के सूरज से अधिक रात के दियों का इंतजार था।

घर-घर दिये और रंग-बिरंगी मोमबत्तियां जल रही थीं। ये दिये अंधकार से लड़ने की शक्ति दे रहे थे। सबके लिए वे खुशी व ऊर्जा का स्रोत थे। आज सब खुश थे। बच्चे-बड़े सब चारों ओर जगमगाते हुए दिये देख आनन्दित और ऊर्जान्वित हो रहे थे। लोग नन्हे-नन्हे दिये जलाकर अंधकार को दूर भगाने की कोशिश कर रहे थे। निराशा का वो अंधकार जो उनके भीतर था।

नन्हा दिया आज खुश था। अन्य दियों के साथ वह भी एक घर के आंगन में जगमगा रहा था। चारों ओर जल रहे दिये जैसे कह रहे थे– ''अंधेरा चाहे कितना भी गहरा क्यों न हो, प्रकाश का एक नन्हा स्रोत भी उससे लड़ने की क्षमता रखता है।''

नन्हे दिये को मुस्कुराते हुए देख मोमबत्ती ने कहा, ''देखा! मैंने कहा था न कि ईश्वर ने भले ही तुम्हें छोटा कद दिया हो, मगर तुम बड़ा कार्य कर सकते हो। भले ही ईश्वर ने तुम्हें सूरज की भांति प्रचुर प्रकाश मात्रा नहीं दी, मगर अंधकार से लड़ने की शक्ति दी है। तुमने सबको नई उम्मीदें दी हैं। इन उम्मीदों के सहारे सभी जन पूरा साल ऊर्जान्वित रहेंगे और हर साल इसी तरह तुमसे सफलता और खुशियों की उम्मीद बनाए रखेंगे।''

काफी समय से मुसीबतों से घिरे निराश, उदास और खिन्न चहेरे आज खुशी से चमक रहे थे। नन्हे दिये को अब स्वयं का महत्व समझ में आ चुका था। वह भले ही नन्हा था। मगर 'उम्मीद का दिया' था। वह उम्मीद जो सबको दु:ख, असफलता और निराशा के अंधकार से लड़ने की ताकत देती है।

उसको अब यह बात समझ में आ चुकी थी कि 'ईश्वर ने सभी को कोई न कोई निश्चित कार्य सौंपा हुआ है। बस, हमें अपना कार्य पूरी भावना और ईमानदारी से करना है। दूसरों की क्षमता व सफलता को देखकर हमें अपने आपको नीचा या कमजोर नहीं समझना चाहिए। कोई सामान्य व्यक्ति भी उत्तम कार्य कर सकता है। सबकी अपनी-अपनी जगह होती है। हमें ईश्वर द्वारा दिए गये कार्यों को पूर्ण आत्मीय स्वरूप से स्वीकार करके उसमें उत्कृष्टता प्रदान करने की कोशिश करनी चाहिए।'

नन्हे दिये में परिवर्तन आया देख मोमबत्ती खुश हो गई। फिर दोनों जगमगाते हुए अंधकार व ऊर्जा व आशा की किरण फैलाते रहे। ❖

लेख : विद्या प्रकाश

# क्या होता है 'स्पेस सूट'?

अन्तरिक्ष यात्रा पर जाने वाले यात्रियों की सुरक्षा की दृष्टि से 'स्पेस सूट' सुरक्षा कवच की भांति उपयोगी है तथा यह उनके लिए अनेक प्रकार से लाभकारी है। स्पेस सूट की उपयोगिता और आवश्यकता को समझने से पूर्व पृथ्वी मण्डल के वातावरण के सम्बन्ध में जानना जरूरी है।

पृथ्वी के ऊपर के वातावरण में इसके प्रत्येक वर्गमीटर पर एक बड़ी गाड़ी के बराबर दबाव डालता है। हमें इसका अनुभव इसलिए नहीं होता क्योंकि हमारे शरीर के अन्दर और बाहर यह दबाव एक समान होता है। शरीर के अन्दर तथा बाहर के तापमान और दबाव में भिन्नता होने पर क्या स्थिति उत्पन्न होगी, इसका अन्दाजा एक उदाहरण से लगाया जा सकता है। यदि धातु के एक बर्तन की भीतर की हवा को इसके भीतर खौलते पानी द्वारा या किसी और माध्यम द्वारा बाहर निकाल दी जाए तो बर्तन वायुमण्डलीय दबाव के कारण पिचक जाएगा। इसी प्रकार अन्तरिक्ष में गया एक अप्रतिरक्षित अन्तरिक्ष यात्री न केवल फूल कर मर जाएगा बल्कि उसका खून भी गर्म पानी की भांति उबलने लगेगा। तरल पदार्थ किस तापमान पर उबलता है, वह वाह्य वातारवरणीय दबाव पर निर्भर करता है।

9 किलोमीटर की ऊँचाई पर पानी 74 डिग्री सेंटीग्रेड के तापमान पर उबलने लगता है। 9 किलोमीटर से अधिक ऊँचाई पर खून शरीर से कम तापमान पर उबलने लगता है। शून्य दबाव पर अन्तरिक्ष यात्री का खून एकदम जानलेवा फोम (झाग) में परिवर्तित हो जाएगा।

इस भौगोलिक और वातावरणीय तथ्य को दृष्टि में रखकर अन्तरिक्ष यात्रियों के सूट इस प्रकार डिजाइन किये जाते हैं ताकि उन्हें आकाशीय यात्राओं के दौरान अन्तरिक्ष में विद्यमान विभिन्न प्रकार के खतरों से बचाया जा सके। अन्तरिक्ष जगत के इन खतरों में अत्यधिक तापमान, खतरनाक विकिरण, तीव्रगति से घूमती हुई वस्तुएं तथा शून्य (वैक्यूम) आदि शामिल हैं।

स्पेस सूट जिसे 'मेंसमेनूवरिंग यूनिट' (एम एम यू) के नाम से भी जाना जाता है, पहनकर लोग अन्तरिक्ष यात्रा में जाते हैं। इस सूट का कपड़ा परतदार बना होता है। इसमें से हर परत का अपना एक उद्देश्य होता है। भीतरी परतों में से एक तापमान को नियंत्रित करता है। इसे पहनकर अन्तरिक्ष यात्री अन्तरिक्षयान को छोड़ सकते हैं तथा स्वतंत्र रूप से अन्तरिक्ष लोक में उड़ सकते हैं। इसमें ऑक्सीजन गैस के लिए भी आवश्यक व्यवस्था होती है।

प्रत्येक सूट में एक आधारभूत लाइफ सपोर्ट प्रणाली होती है। इसमें आवश्यकतानुसार पर्याप्त मात्रा में पानी तथा ऑक्सीजन रखी जा सकती है। जिनकी सहायता से अन्तरिक्ष यात्री कई घंटों तक

अन्तरिक्ष जगत में चहलकदमी कर सकते हैं। स्पेस सूट में लिक्विड कूलिंग तथा वेंटीलेशन प्रणाली होती है।

दरअसल प्रत्येक स्पेस सूट बहुत से अलग-अलग टुकड़ों से मिलकर बना होता है। प्रत्येक टुकड़े को निश्चित आकार के हिसाब से बनाया और तैयार किया जाता है। अन्तरिक्ष की जोखिम भरी यात्रा में जाने वाले व्यक्ति को इन्हीं टुकड़ों से निर्मित ऐसा सूट दिया जाता है जिसमें वह फिट हो सके तथा अपनी यात्रा निरापद और सुरक्षित कर सके।

## ग्रहण : एक नजर में

जब सूर्य तथा पृथ्वी के मध्य चन्द्रमा आ जाता है, तो चन्द्रमा के कारण सूर्य पूरी तरह स्पष्ट दिखाई नहीं देता है, इस स्थिति को 'सूर्य ग्रहण' कहते हैं। इस समय भारी मात्रा में पराबैंगनी किरणें उत्सर्जित होती हैं। इसलिए नंगी आँखों से सूर्य ग्रहण नहीं देखना चाहिए। यह स्थिति अमावस्या के दिन होती है। जब सूर्य तथा चन्द्रमा के बीच पृथ्वी आती है, तो उसकी छाया चन्द्रमा पर पड़ने से चन्द्रमा धूमिल हो जाता है, इस स्थिति को 'चन्द्र ग्रहण' कहते हैं। यह हमेशा पूर्णिमा की रात को होता है।

चूंकि पृथ्वी और चन्द्रमा के परिक्रमा तलों में $5^0$ का अन्तर पाया जाता है। इसलिए प्रत्येक पूर्णिमा तथा अमावस्या को ग्रहण नहीं होते। एक वर्ष में अधिकतम सात ग्रहण (चन्द्र व सूर्य ग्रहण) दोनों आ सकते हैं।

**प्रस्तुति : प्रियंका चोटिया 'आंचल'**

# चित्रकथा

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

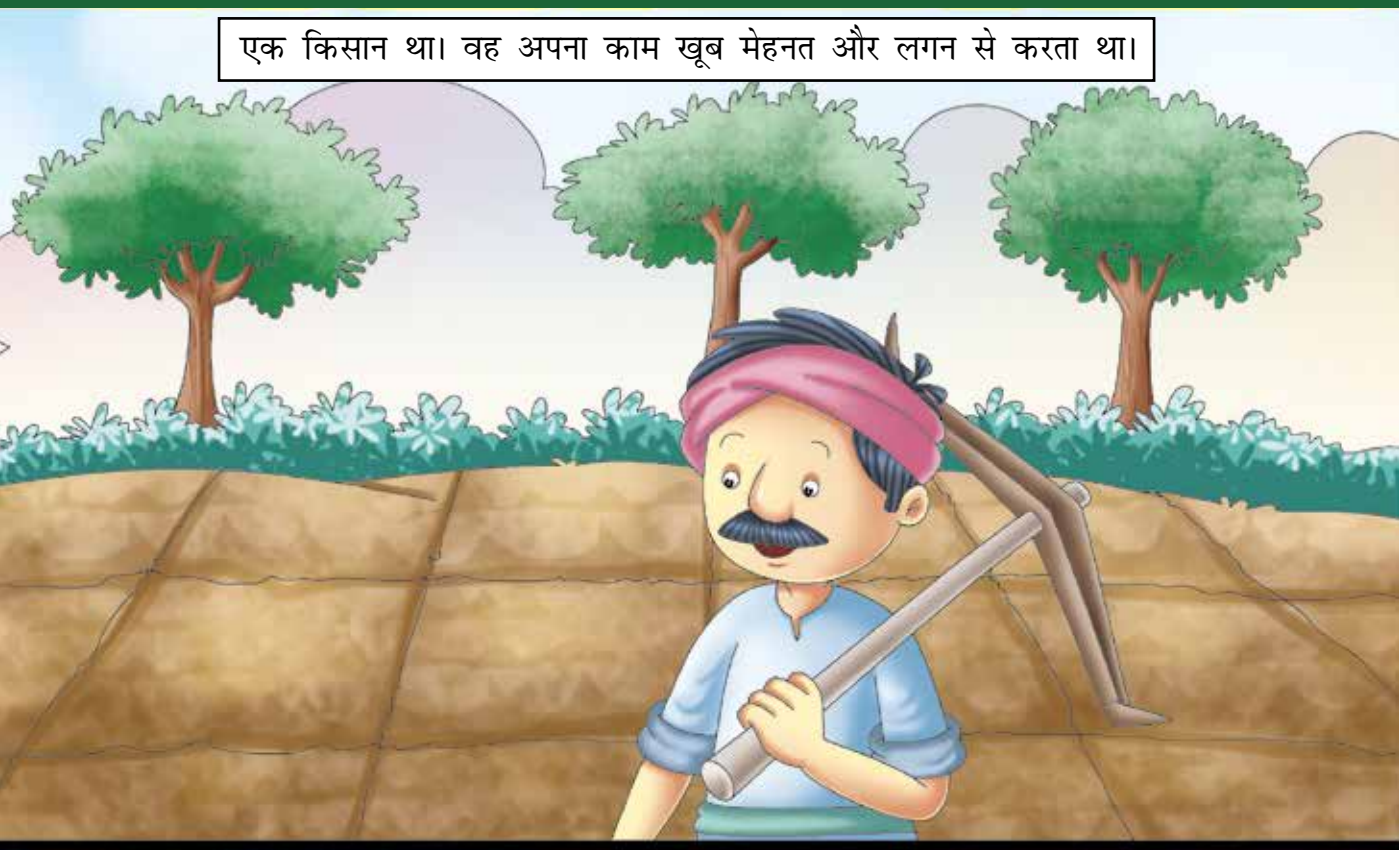

जब वह हलवाई की दुकान के पास गया तो उसे मिठाइयों की खुश्बू आने लगी। किसान अपने आपको रोक नहीं पाया और उसके पास जाकर खड़ा हो गया। किसान वहाँ कुछ देर तक खड़ा रहा और मिठाइयों की सुगंध का आनन्द लेता रहा।
जब हलवाई ने किसान को मजे से उसकी दुकान की मिठाइयों की खुश्बू का आनन्द लेते देखा तो वह किसान के पास गया।
पैसे निकालो।
किसान हैरान होकर बोला– मैंने न तो तुम्हारे से मिठाई खरीदी है और न ही खाई है। फिर पैसे किस बात के।
किसान की यह बात सुनकर हलवाई उससे झगड़ा करने लगा।

अरे! अरे क्या हुआ? तुम दोनों क्यों लड़ रहे हो?
किसान ने पूरी बात बताई।
अरे! भाई मैं आपको एक सुझाव देता हूँ।
किसान हलवाई के पास गया। उसने अपनी जेब से कुछ सिक्के निकाले और उन्हें दोनों हाथों के बीच में डालकर खनकाया।

किसान फिर वापस जाने लगा तो हलवाई उसके पीछे चलने लगा और उससे पैसा मांगने लगा।
मेरे पैसे तो दो।
जैसे मिठाई की खुश्बू का आनन्द लेना मिठाई खाने के बराबर ही है तो फिर वैसे ही सिक्कों की खनक सुनना भी पैसे लेने के बराबर ही है।
यह सुनकर सभी लोग जोर-जोर से हँसने लगे और हलवाई शर्मिंदा होकर वापस चला गया।
शिक्षा : सूझ-बूझ से हर समस्या को सुलझाया जा सकता है।

जन्मदिन 3 दिसम्बर पर विशेष

स्मरण : कैलाश जैन

# सादगी की मूर्ति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

आज जब दुनिया में सिद्धान्तों और मूल्यों की राजनीति अपनी अंतिम सांसे गिन रही है और चापलूसी, तड़क-भड़क, भ्रष्टाचार, सिद्धान्तहीनता, स्वार्थ आदि तत्व राजनीति के स्थायी भाव बनते जा रहे हैं, राजनीति अब 'मिशन' न होकर 'प्रोफेशन' बनती जा रही है। ऐसे दौर में राजेन्द्र बाबू की याद एक सुखद अहसास की तरह लगती है। भारत जैसे विशाल गणतन्त्र के इस प्रथम राष्ट्रपति की मौलिक सादगी और अपनी मिट्टी की गंध से महकता, सरल व्यक्तित्व सचमुच आज के युग में एक दुर्लभ वस्तु बनकर रह गया है।

राजेन्द्र बाबू के व्यक्तित्व को परिभाषित करते हुए तत्कालीन वायसराय लॉर्ड लिनथिनगो ने कहा था– डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद न तो बेर की तरह ऊपर से मीठे और अन्दर से सख्त हैं और न ही बादाम की तरह ऊपर से सख्त व अन्दर से मृदु हैं। वस्तुतः वह भीतर और बाहर दोनों तरफ से अंगूर की तरह मृदु, मीठे और मधुर हैं।

यह सन्त राजनेता बिहार के सारण जिले के छोटे से गाँव जीरादेई में 3 दिसम्बर 1884 को जन्मा। राजेन्द्र बाबू बचपन से ही विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने अपने शैक्षणिक जीवन की हर परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। आत्म-विश्वास और स्वाभिमान की जीवन्त प्रतिमूर्ति राजेन्द्र बाबू में ये गुण जन्मजात थे।

राजेन्द्र बाबू ने वकालत की परीक्षा सर्वोच्च अंकों में उत्तीर्ण कर कलकत्ता हाईकोर्ट में वकालत प्रारम्भ की। अपनी प्रतिभा के बल पर उन्होंने वकालत के क्षेत्र में बहुत प्रसिद्धि और कीर्ति हासिल की। उन्होंने वकालत के पेशे में भी कभी अपने सिद्धान्तों और मूल्यों से समझौता नहीं किया। शुद्ध मानवतावादी दृष्टिकोण और ईमानदारी उनके पेशे का मुख्य आधार बनी रही। सन् 1917 में गाँधी जी के चम्पारण सत्याग्रह से प्रभावित होकर राजेन्द्र बाबू ने वकालत छोड़ दी और अपना समूचा जीवन गाँधी जी के नेतृत्व में राष्ट्र को समर्पित कर दिया। सन् 1935 में बिहार में आए विनाशकारी भूकम्प में उन्होंने जी-जान से लोगों की सेवा की। राजेन्द्र बाबू तीन बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। सन् 1946 में नेहरु जी के नेतृत्व में गठित अंतरिम सरकार में उन्हें कृषि मंत्री बनाया गया।

जनवरी सन् 1950 को राजेन्द्र बाबू सर्वसम्मति से स्वाधीन भारत के प्रथम राष्ट्रपति चुने गये। देश के सर्वोच्च पद पर चुने जाने के बावजूद उन्होंने सादगी का अपना मूल गुण नहीं छोड़ा। राष्ट्रपति भवन के ऐश्वर्य को वह कभी स्वीकार नहीं कर पाए। उनका सीधा-सादा देहाती किसान-मानस राष्ट्रपति भवन की तड़क-भड़क और तामझाम को

हमेशा अपव्यय मानता रहा। राष्ट्रपति भवन में ऊँचे-ऊँचे नर्म गद्दों वाले पलंग उन्हें रास नहीं आए। उन्होंने उन आरामदायक पलंगों को हटवाकर लकड़ी का साधारण तख्त लगवाया और बारह वर्ष तक उसी तख्त पर सोए। राष्ट्रपति चुने जाने पर उनके लिए सिलवाये गये कपड़ों का जब दो सौ पचास रुपये का बिल आया तो वह बेहद परेशान हुए। उनका कहना था कि यह बिल्कुल फिजूलखर्ची है। गाँधीवाद की शिष्य-परम्परा के राजेन्द्र बाबू अनुपम उदाहरण थे। गाँधी जी ने राजेन्द्र बाबू की प्रतिभा को व सादगी को बहुत अच्छी तरह पहचाना। एक बार अपने से मिलने आये युवकों को सम्बोधित करते हुए गाँधी जी ने डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की ओर इंगित करते हुए कहा– ''यही हैं बिहार के राजेन्द्र प्रसाद, जिनका त्याग हमारे लिये प्रेरणा और गौरव की बात है, ये पटना हाईकोर्ट जज की कुर्सी पर बैठने वाले थे, किन्तु इन्होंने देश और समाज के लिए वह पद तो क्या, अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया।'' गाँधी जी अक्सर राजेन्द्र बाबू को 'अजातशत्रु' कहा करते थे अर्थात् जिसका कोई शत्रु न हो।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रबलतम समर्थक थे। उनके प्रयासों से ही भारतीय संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा मिल सका। राजेन्द्र बाबू की प्रेरणा और प्रयासों से ही संविधान की हिन्दी प्रति तैयार हो सकी। भारतीय राजनेताओं में सम्भवतः राजेन्द्र बाबू ही ऐसे एकमात्र नेता थे, जिन्होंने अपनी आत्मकथा हिन्दी भाषा में लिखी। जेल में लिखी हुई यह आत्मकथा हिन्दी साहित्य की एक अनुपम धरोहर है। राजेन्द्र बाबू सात भाषाओं में पारंगत थे, उन्हें भारतीय भाषाओं से विशेष अनुराग था। संस्कृत उनकी प्रिय भाषा थी। अपने राष्ट्रपतिकाल में उन्होंने दो बार विश्व संस्कृत परिषद के सम्मेलन का उद्घाटन किया और दोनों बार अपना उद्घाटन भाषण शुद्ध एवं परिष्कृत संस्कृत में दिया।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भारत माता के ऐसे सपूत थे, जिन पर राष्ट्र हमेशा गर्व करता रहेगा। उनकी बहुमुखी प्रतिभा, सादगी से साराबोर व्यक्तित्व, सरलता, आत्म-त्याग, पर-दुःख कातरता, राष्ट्र-निष्ठा, लगन, कर्मठता आदि गुण उन्हें एक विराट स्वरूप प्रदान करते हैं।

❖

जानकारी : विद्या प्रकाश

# वृक्ष कैसे सहते हैं ठंड

उत्तरी गोलार्द्ध की हडकंपा देने वाली तेज ठंडक में पेड़-पौधों को पानी की कमी का सामना उसी प्रकार करना पड़ता है जिस प्रकार गर्म इलाकों के पेड़-पौधों को गर्मी के मौसम में। इसकी वजह यह है कि सर्दियों में बर्फ के कारण इन इलाकों की मिट्टी जमकर इतनी कड़ी हो जाया करती है कि पेड़-पौधे उसमें से तनिक भी पानी नहीं खींच पाते। इस स्थिति में उन्हें अपने पत्तों में मौजूद रस से ही अपना पोषण और गुजारा करना पड़ता है।

इसका सबसे अच्छा उदाहरण है चीड़ के सुईनुमा पत्ते। अगर इन पत्तों में मौजूद पानी जमकर बर्फ बन जाये तो पत्ते टूटकर झर जायेंगे। मगर पत्तों में रस अत्यल्प मात्रा में होता है यानी उनमें जमने के लिए अधिक पानी होता ही नहीं। यह पानी भांप बनकर नहीं उड़ता क्योंकि पत्तियों के छेद बहुत गहरे खांचों में स्थित होते हैं।

❖

बाल कहानी : पुष्कर द्विवेदी

# प्रेरणा

राजू दरवाजे की दहलीज पर आकर बैठ गया। उदास! हताश!! उसकी वार्षिक परीक्षा निकट थी। वह बहुत घबरा रहा था। उसका मन परीक्षा के प्रति निराश हो रहा था। वह सोचने लगा था– कैसे पास होऊंगा। क्या करूं? पास होने की कोई सूरत नहीं दिखती।

राजू अपनी तिमाही और छमाही परीक्षाओं में दो-दो विषयों में फेल था। गणित और अंग्रेजी में वह कमजोर था।

वह सोचने लगा कि सातवीं कक्षा पार कर आठवीं में कैसे आ पायेगा? इधर पापा ने चेतावनी दे दी– यदि तू पास नहीं हुआ तो खेलना बन्द। दोस्तों से मिलना, घूमना-फिरना बन्द।

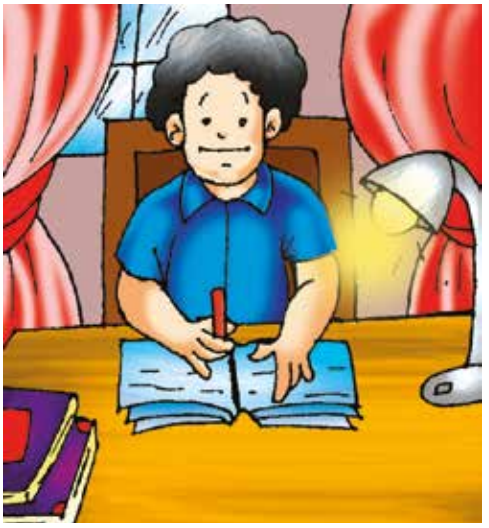

फिर सबसे बड़ा दुख तो राजू को यह हो रहा था कि यदि वह पास नहीं हुआ तो उसके पापा गर्मी की छुट्टियों में उसे नैनीताल और मसूरी नहीं ले जायेंगे। यह सोचकर वह बड़ा दुखी हो उठा था।

तभी उसने निगाह नीची कर एक गहरी सांस छोड़ी। यकायक उसकी नजर एक चींटी पर पड़ी जो एक बड़े से मृत झींगुर को खींचती हुई दरवाजे की दहलीज पर चढ़ रही थी। परन्तु चींटी बार-बार गिर जाती थी। राजू अपलक उस चींटी को देखने लगा। नन्हीं-सी चींटी अपने से कई गुना भारी झींगुर को घसीटती हुई दहलीज पर से दो बार गिर चुकी थी परन्तु तीसरी बार चींटी दहलीज पर चढ़ने में सफल हुई। राजू उसकी मेहनत और सफलता पर मन ही मन प्रसन्न हुआ।

सहसा राजू के मन में विचार उठा– यदि नन्हीं-सी चींटी इतने बड़े झींगुर को लेकर प्रयत्न और परिश्रम करके दहलीज पर चढ़ सकती है तो वह भी परिश्रम और मेहनत से पढ़कर वार्षिक परीक्षा में उत्तीर्ण हो सकता है। इस प्रकार वह पापा को प्रसन्न कर सकता है और पापा की प्रसन्नता के सहारे अपनी हर इच्छा पूर्ण कर सकता है। राजू मन ही मन झूम उठा और तेजी से अपने कमरे में पढ़ने के लिए चल दिया, जहाँ पुस्तकें उसकी प्रतीक्षा कर रही थीं। ❖

कविता : राजकुमार जैन 'राजन'

# ऐसा काम न करना

हँसना और हँसाना अपना,
जीवन का आदर्श हो।
देशहित में मर मिट जायें,
जितना भी संघर्ष हो।।

दीन-दुखियों की करेंगे सेवा,
मानव का कल्याण करें।
उच्च आदर्शों को अपनायें,
राष्ट्र का उत्थान करें।।

ऐसा काम कभी न करना,
जिससे सबका मान घटे।
महापुरुषों की वाणी से,
कभी न हमारा ध्यान हटे।।

बुरी आदतें न अपनाएं,
सदा जगत में आदर पाएं।
बुजुर्गों की सेवा करके,
उनका स्नेह संबल पाएं।।

बाल कविता : हरजीत निषाद

## समय की कीमत

समय की कीमत बहुत अधिक है,
व्यर्थ न इसको खोयें हम।
जैसा समय, चलें हम वैसा,
दुख के बीज न बोयें हम।।

सदुपयोग करें हम हरदम,
समय की गति को पहचानें।
चाल चलें न उल्टी सीधी,
कांटे कभी न बोयें हम।।

कभी नहीं वह हार मानता,
समय पे करता है जो काम,
समय पे सोना समय पे उठना,
नियम कभी न तोड़ें हम।।

बीत गया जो कभी नहीं वह,
समय लौट कर आयेगा।
दुख है आज तो कल सुख होगा,
धीरज कभी न खोयें हम।।

प्रस्तुति : बी.आर. चोपड़ा

# पहेलियां ?

1. धन दौलत से बड़ी है यह।
सब चीजों से ऊपर है यह।
जो पाए पंडित बन जाए।
बिन पाए इसे मूर्ख कहलाए।

2. देह काठ मुँह आठ।
सूरत जानी पहचानी।
वैसे उसकी जीभ नहीं है।
पर बोले मीठी वाणी।

3. तीन अक्षर का मेरा नाम।
उल्टा सीधा एक समान।
आता हूँ आराम के काम।

4. दो अक्षर का नाम रत्न है।
उल्टो तो बन जाता है राही।
धारण करो प्रेम से मुझ को।
पर चखने की है मनाही।

5. करता है जो लगातार काम।
तीन भाई और एक मकान।
जो न करे तनिक विश्राम।
कौन बताए उसका नाम।

6. एक चाँद अठारह तारे।
खेलें मुन्ना-मुन्नी प्यारे।

7. दूर दूर की सैर कराती।
नहीं मैं कोई मोटर कार।
एक जगह पर खड़ी रहूँ मैं।
नाम बतलाओ मेरा यार।

8. न पहिए न पैर हमारे।
फिर भी चलती जाती हूँ।
कई रंग का पानी पीती।
खाना कभी न खाती हूँ।

9. बचपन में तो भाए सबको,
किन्तु जवानी में खूंखार।
देख बुढ़ापा उसका बच्चो।
संध्या, नमन करे संसार।।

10. व्योम नगर का एक अनूठा,
देखा हमने राजकुमार।
दिन-रात घटता-बढ़ता रहता,
बदले नए रूप आकार।।

(पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें।)

लेख : कमल सौगानी

# मेहनती चींटियां

लुसियाना के रेगिस्तानी इलाकों में 'अट्टा' नामक चींटियां पाई जाती हैं जो पेड़-पौधों से मीठा मधु इकट्ठा करती हैं। ये चींटियां प्राय: पेड़-पौधों का रस चूसने वाले भुनगों या एफिड से टपकने वाला मीठा रस इकट्ठा करती हैं किन्तु इनके रस का मुख्य स्रोत बलूत के छोटे वृक्ष होते हैं जिनसे सफेद मीठा रस टपकता है। इस प्रकार इकट्ठा किए हुए मधु का सुरक्षित भंडार बनाने के लिए ये चींटियां बहुत विचित्र पात्र का प्रयोग करती हैं।

आप जानकर आश्चर्य में पड़ जायेंगे कि यह पात्र स्वयं कुछ जीवित मजदूर चींटियां होती हैं जिनका पेट मधु इकट्ठा करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है इसलिए प्राय: इन चींटियों को 'मधु कलश' चींटी का नाम दिया जाता है।

इन चींटियों का पेट बहुत लचीला होता है। वे चींटियां अपनी बस्ती तक ले जाने के लिए अपने पेट में काफी मधु इकट्ठा कर लेती हैं। यह मधु चींटियों द्वारा अन्त में बस्ती में स्थित कुछ जीवित कलशों में उड़ेल दिया जाता है। प्राय: मधु कलश चींटियां जिनका पेट मधु से भरकर गुब्बारे जैसा फूल जाता है। एक अंधेरे सूखे कमरे में छत की दीवार से लटकी रहती हैं। इनके पेट में सुरक्षित मधु बस्ती की चींटियों को अकाल पड़ने पर काम आता है।

मधु कलश चींटी और बस्ती की एक साधारण मजदूर चींटी के शरीर में कोई अंतर नहीं होता। बाहर से मधु इकट्ठा करने वाली हर मजदूर चींटी देखती है कि बस्ती में कोई मधु कलश खाली नहीं है तो वह बस्ती की किसी भी भूखी मजदूर चींटी को मधु की एक बूंद स्वीकार कर लेने का अनुरोध करती है। यह भूखी चींटी इसके लिए तैयार हो जाती है फिर अपनी भूख के कारण मधु स्वीकार करने वाली चींटी और मधु की मांग करती है फिर तो बाहर से आने वाली हर चींटी अपना मधु इसी चींटी के पेट में उड़ेलती जाती है। इस भूखी चींटी का लालच इसके लिए बहुत महंगा सिद्ध होता है। पेट में मधु भरकर फूल जाने से उदर के अन्य भाग दब जाते हैं और पेट की लचकीली दीवारें अपने अधिकतम सीमा तक तन जाती हैं। अब यह जीवित मधु कलश चींटी और कोई काम नहीं कर सकती है और अन्य दूसरी मधु कलश चींटियों की भांति अपनी बस्ती के एक अंधेरे कमरे में जहाँ दूसरी मधु कलश चींटियां रहती हैं जाकर छत से लटक जाती हैं।

अमरीका में रेगिस्तानी इलाकों में पाई जाने वाली कुछ मधु कलश चींटियों का पेट एक सेंटीमीटर तक फूल कर गुब्बारा जैसा बन जाता है। प्राय: एक बस्ती में लगभग 300 मधु कलश पाये जाते हैं और प्रत्येक मधु कलश चींटी अपने वजन से 9 गुना अधिक वजन का मधु अपने पेट में जमा रखती है। ❖

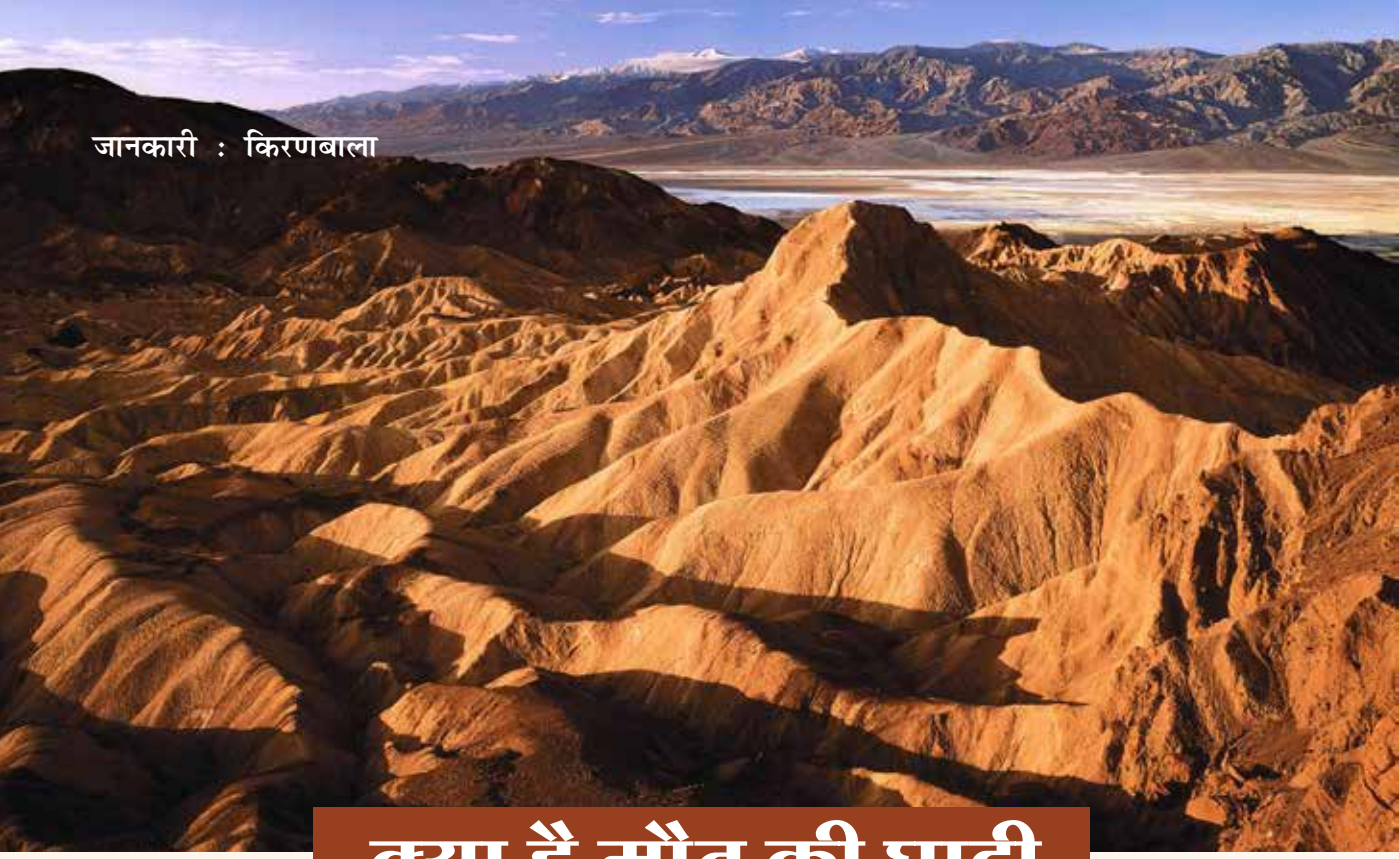

जानकारी : किरणबाला

# क्या है मौत की घाटी

आपने मौत की घाटी या 'डेथ वैली' का नाम तो सुना होगा, लेकिन क्या आप जानते हैं कि यह क्या है और कहाँ है और इसे मौत की घाटी क्यों कहा जाता है?

डेथ वैली उत्तरी अमेरिका में कैलिफोर्निया के दक्षिण पूर्व में नेवादा की सीमा के पास है। यह उत्तरी अमेरिका का सबसे गर्म और सूखा स्थान है। इसकी लंबाई 225 किलोमीटर है और अलग-अलग स्थानों पर इसकी चौड़ाई 8 से 24 किलोमीटर के बीच है, इसकी तली का सबसे नीचा स्थान समुद्र तल से 282 फुट नीचे है।

इस घाटी की अपनी कुछ विशेषताएं हैं जिसकी वजह से इसे मौत की घाटी कहा जाता है। इसका तापमान 49 डिग्री सेंटीग्रेड तक पहुँच जाता है। पानी तो जैसे यहाँ है ही नहीं क्योंकि वर्षा नाम मात्र की होती है। यदि कहीं पानी है भी तो वह खारा पीने योग्य नहीं है। सारी घाटी में बालू ही बालू नजर आती है। पहले जब लोग अमेरिका जाते थे तो उन्हें इस घाटी से होकर ही गुजरना पड़ता था। अत्यधिक तापमान सूखा होने की वजह से अधिकांश लोग घाटी पार करते-करते मर जाते थे। इन्हीं भयानक परिस्थितियों के कारण ही इसका नाम 'डेथ वैली' पड़ा।

सन् 1870 में विशेषज्ञों ने जब इस घाटी का अध्ययन किया तो वहाँ हजारों इंसान और जानवरों की हड्डियों के ढांचे मिले। बाद में सन् 1933 में इस वैली को अमेरिका का नेशनल मॉन्यूमेंट घोषित कर दिया। अब यह पर्यटकों के लिए एक रमणीय स्थल बन चुका है जिसे देखने हर वर्ष लाखों लोग जाते हैं। ❖

कहानी : कल्पनाथ सिंह

# मोती जुगनू

सुन्दरवन एक बहुत ही घना जंगल था। उसमें छोटे-बड़े ढेर सारे जानवर रहते थे। उसी जंगल के किनारे अपनी झोपड़ी बनाकर एक बुढ़िया भी रहती थी। बुढ़िया जंगल के सारे छोटे-बड़े जानवरों के साथ ही पेड़-पौधों को बहुत प्यार करती थी। सभी जानवरों, कीट, पतंगों को वह बेटा ही कहकर पुकारती थी। इसलिए सारे छोटे-बड़े जानवर भी उसे माँ की तरह ही सम्मान भी देते थे।

बुढ़िया के कारण ही उस जंगल के जानवरों में कभी लड़ाई-झगड़ा नहीं होता था। सारे जानवर मेलजोल से रहकर एक-दूसरे के सुख-दुःख का भी ध्यान रखते थे। पेड़-पौधे भी बुढ़िया के प्यार-दुलार से इतने प्रसन्न रहते थे कि बुढ़िया जिधर से निकलती, पेड़-पौधे अपने आप मीठे-मीठे पके फल गिराकर बुढ़िया माँ का स्वागत करते थे। इसलिए बुढ़िया को कभी खाने-पीने की भी चिंता नहीं रहती थी।

दीवाली का त्योहार आने वाला था। एक दिन शाम को बुढ़िया माँ अपनी झोपड़ी के बाहर बहुत ही चिन्तित और उदास बैठी थी। तभी उधर से एक नन्हा-सा कीड़ा निकला और बुढ़िया माँ को चिन्तित देखकर पूछ बैठा– माँ आज तुम इतनी चिन्तित और उदास क्यों बैठी हो? क्या किसी जानवर ने तुमको कुछ कहा है क्या?

–नहीं बेटा। मुझे किसी ने भी कुछ नहीं कहा है।

–तो माँ तुम आज इतनी चिन्तित और उदास क्यों हो?

–क्या करोगे बेटा, जानकर। मेरी चिन्ता और उदासी तुमसे दूर नहीं हो सकती है?

–माँ, तुम ऐसा क्यों सोचती हो? मुझे नन्हा-सा कीड़ा मत समझो, माँ, तुम अपनी चिन्ता बताओ। मैं प्राण देकर भी तुम्हारी चिन्ता और उदासी दूर न कर दूँ तो मेरे जीने पर धिक्कार है।

नन्हें कीड़े का यह साहस, यह उत्साह देखकर बुढ़िया गद्‌गद् हो गई और न चाहते हुए भी बोली– बेटा, दीवाली का त्योहार आने वाला है। जब भी दीवाली का त्योहार आता है। नगर और गाँव दीपों से जगमगा उठते हैं। लेकिन मेरे जंगल में दीवाली के दिन भी घना अंधेरा रहता है। बेचारे जानवरों के पास दीपक, तेल, बाती तो है नहीं कि मैं उनसे कहूँ कि जंगल में भी दीवाली होनी चाहिए। इसलिए बेटा मैं चिंतित हूँ और उदास हूँ कि कोई ऐसा उपाय होता कि मेरे जंगल में मेरे बेटे भी दीवाली का त्योहार मनाकर जंगल को जगमग कर देते।

बुढ़िया की बात सुनकर वह नन्हा-सा कीड़ा कुछ सोचने लगा। सोचकर कुछ ही देर में बोल पड़ा– माँ, तुम चिन्ता न करो। मैं तुम्हारी सारी

चिन्ता और उदासी अब दूर करके ही रहूँगा।

–तुम कैसे से मेरी चिन्ता और उदासी दूर करोगे बेटा? मैं भी तो सुनूं।

–माँ, तुम आशीर्वाद दो कि मैं अपने अभियान में सफल रहूँ। अब या तो मैं तुम्हारी चिन्ता और उदासी दूर करके रहूँगा। नहीं तो अपने प्राण दे दूंगा। बस आगे मत पूछो। मुझे केवल आशीर्वाद दो।

–युग-युग जीवो, मेरे लाल। तुम अपने उद्देश्य में सफल हो, यह मैं तुमको दिल से आशीर्वाद देती हूँ।

वह नन्हा-सा कीड़ा बुढ़िया माँ के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लेकर उड़ चला। उड़ते-उड़ते आँधी-तूफानों का मुकाबला करते-करते कई दिन बाद वह तारों के देश में पहुँच गया।

शाम का समय था। सारे के सारे तारे आकाश में चमक-दमक कर खेल-कूद रहे थे। तभी एक तारे सोनू की नजर उस कीड़े पर पड़ी तो वह खुशी से उछलकर चीख पड़ा– अरे वह देखो कोई नन्हा-सा कीड़ा, धरती से उड़ता हुआ आ गया। सोनू के इतना कहते ही सभी तारों ने उस कीड़े को घेर लिया और खुशी से पूछ बैठे– भाई, तुम कहाँ से आये हो और तुम्हारा नाम क्या है?

–भैया, मैं धरती से आया हूँ और मेरा नाम मोती जुगनू है।

–तो यहाँ कैसे आ गये?– सभी तारे प्यार से एक साथ बोल पड़े।

–आप ही लोगों से मिलने और एक चीज मांगने आया हूँ, भैया।

–बोलो-बोलो! क्या चाहिए? हम लोग तुम्हें अभी देने के लिए तैयार हैं।– सोनू की बात सुनकर सभी तारे उत्साह से एक साथ बोल पड़े।

तारों का प्यार और उनका उल्लास देखकर मोती जुगनू कीड़े की छाती फूल गई। वह उत्साह से विनम्र होकर बोल पड़ा– तारों भैया, धरती पर हर वर्ष दीवाली का त्योहार मनाया जाता है जिसमें गाँव, नगर से लेकर गली-गली दीपों से जगमगा उठती है। लेकिन हम जंगलवालों के पास न दीया होता है न तेल-बाती। इसलिए हम लोग दीवाली का त्योहार नहीं मना पाते हैं। आप लोगों के पास बिना तेल-बाती का बेपनाह उजाला होता है। आप हमें थोड़ा-सा ऐसा उजाला दे दें कि हम जंगल में भी प्रतिवर्ष दीवाली मनाने लगें।

–अरे मित्र! तुम जितना चाहो उतना उजाला ले जाओ। हम लोग तो धरतीवालों से बहुत प्यार करते हैं। हम लोग तो खुद चाहते हैं कि धरती भी हम लोगों की तरह स्वर्ग बन जाए। तुम जितना चाहो उजाला ले जाओ।

जुगनू को तो ऐसा लगा कि मुँह मांगा वरदान ही मिल गया। वह तुरन्त एक गठरी उजाला

बांधकर धरती की ओर चलने लगा तो सारे तारे फिर बोल पड़े– भैया, मोती जुगनू, वैसे इस उजाले को जितना भी बांटोगे कम नहीं होगा। फिर भी अगर कम होगा तो तुम फौरन आकर जितना चाहो उतना ले जाना। इस उजाले को न तेल चाहिए न बाती।

जुगनू हर्षविभोर होकर उजाले की गठरी लेकर धरती की ओर लौटकर पहले बुढ़िया माँ के पास आकर बोला– माँ, मैं अपने अभियान में सफल हो गया। अब तुम चिन्ता मत करो। दीवाली के दिन देखना कि जंगल की रौनक कैसी होती है?

–खुश रहो बेटा। मुझे तो बड़ी चिन्ता हो गई थी कि न जाने मेरा नन्हा-सा लाल कहाँ भटक रहा होगा? कहाँ गये थे बेटा?

–माँ तुम्हें पूरी बात बाद में बताऊंगा। पहले मुझे दीवाली की इन्तजाम करने दो। आज्ञा है न माँ?– जुगनू बोला।

–जाओ-जाओ बेटा। खुश रहो। मगन रहो, सफल रहो।

बुढ़िया माँ का आशीर्वाद पाकर नन्हा मोती जुगनू अपने एक-एक साथी जुगनू को उजाला बाँटने लगा। दीवाली की संध्या तक उसने सारे जुगनुओं को उजाला बांट दिया।

शाम होते ही उधर गाँव में, नगर में, दीपक ज्योंहि जलने लगे कि इधर जंगल में भी रौनक छा गयी। सारे के सारे जुगनुओं ने पेड़ों के पत्तों-पत्तों पर अपना उजाला करके जंगल का कोना-कोना जगमगा दिया।

इस तरह एक नन्हे से मोती जुगनू के साहस और दृढ़ संकल्प से सारे जुगनुओं को बिना तेल, बाती के उजाला मिल गया। अब जब भी अंधेरी रात गहराती है। अपने उजाले से हर समय जंगल ही नहीं, गाँव, नगर में भी आकर अपना उजाला बिखेर देते हैं।

बुढ़िया माँ ने तो अपने बेटे मोती जुगनू को गले से लगा लिया। फिर गद्गद् होकर बोल पड़ी– बेटा मोती! तूने एक असंभव कार्य को सम्भव बना दिया। तुम्हारी तरह अगर कोई भी मन में दृढ़ संकल्प कर ले तो कोई भी कार्य इस संसार में असम्भव नहीं है।

पूरी बात जानकर और दीवाली के दिन जंगल की रौनक देखकर सारे जानवरों ने दूसरे दिन 'बुढ़िया माँ जिन्दाबाद', 'मोती जुगनू जिन्दाबाद' के नारों से जंगल का कोना-कोना गूंजा दिया।

और तभी से एक मोती जुगनू के पुरुषार्थ से सभी जुगनुओं को एक ऐसा उजाला मिल गया जो कभी भी समाप्त नहीं होने वाला है। ❖

वैज्ञानिक जानकारी : घमण्डीलाल अग्रवाल

# विज्ञान प्रश्नोत्तरी

**प्रश्न :** यदि पानी में पहले बर्फ डालकर चीनी घोलें तो चीनी देर में क्यों घुलती है?

**उत्तर :** दरअसल, किसी भी ठोस की विलेयता ताप पर निर्भर करती है। पानी में बर्फ डालने से पानी का ताप कम हो जाता है जिससे पानी की विलपयिता भी कम हो जाती है। यही कारण है कि पानी में यदि बर्फ को पहले डालकर बाद में चीनी मिलाई जाए तो चीनी देर में घुलती है। इस स्थिति से बचने के लिए तुम्हें सदैव यह बात याद रखनी चाहिए कि शर्बत बनाने के लिए पानी में पहले चीनी मिलाकर बाद में बर्फ डालनी चाहिए।

**प्रश्न :** हीरे को गलाना कठिन क्यों है?

**उत्तर :** हीरा एक बहुमूल्य धातु है जिसके आभूषण शरीर की खबूसूरती में चार-चाँद लगाने में सहायक होते हैं। लेकिन क्या तुम जानते हो कि हीरे को गलाना कठिन क्यों होता है? दरअसल, धरती की अब तक ज्ञात सर्वाधिक कठोर धातु 'हीरा' ही है। हीरे को गलाकर द्रव (Liquid) में नहीं बदला जा सकता है। हीरे को गलाने के लिए समुद्र तल पर पृथ्वी पर पड़ने वाले वायु दाब का सौ लाख गुना दाब चाहिए। इतना अधिक दाब उत्पन्न करना बड़ी मुश्किल बात है। अत: हीरे को गलाना कठिन होता है।

**प्रश्न :** यदि गमलों में अधिक जल डाल दिया जाए तो पौधे क्यों मर जाते हैं?

**उत्तर :** तुम अपने घरों में पौधे लगाने के लिए खूबसूरत गमलों का अवश्य प्रयोग करते होंगे। गमलों में पौधे लगाने के लिए उनमें मिट्टी रखनी अत्यन्त आवश्यक है। इस मिट्टी में वायु भरी रहती है। यदि गमले में आवश्यकता से अधिक पानी डाल दिया जाए तो मिट्टी में उपस्थित वायु की जगह पानी ले लेता है। यह तो तुम जानते ही हो कि वायु सभी जीवधारियों के लिए कितनी उपयोगी होती है। अत: पौधों को श्वसन के लिए वायु नहीं मिल पाती और पौधे मर जाते हैं।

**प्रश्न :** कुछ लोगों की त्वचा कटने पर अधिक खून क्यों बहता है?

**उत्तर :** यदि तुम्हारी त्वचा कट जाए, तो थोड़ी देर बाद वहाँ थक्का जम जाने से खून का बहना अपने आप थम जाता है। शरीर में बिम्बाणु (Thrombocytes) नामक कणिकाएं होती हैं जो बहते हुए खून को जमा देती हैं। किन्तु कुछ लोगों की त्वचा कटने पर उनका खून लगातार बहता रहता है, रूकता नहीं। ऐसा उनमें बिम्बाणुओं की कमी के कारण होता है।

दो बाल कविताएं :
राजेन्द्र निशेश

# तितली जैसे न्यारे दिन

बचपन के मतवारे दिन,
तितली जैसे न्यारे दिन।

कागज़ की नाव चलाते,
भीगे भीगे प्यारे दिन।

अकड़-बकड़ खेल खिलाते,
मस्ती भरे दुलारे दिन।

दिन को खिलते फूलों से,
सूरज से उजियारे दिन।

नित नये वे सपने बुनते,
रात को चन्दा-तारे दिन।

ऊँच-नीच का भेद नहीं,
पाठ पढ़ाते सारे दिन।

# पुस्तक

हर पुस्तक ज्ञान बढ़ाती है,
जीने का गुर सिखलाती है।
कैसे बढ़ सकते हम आगे,
जीवन रहस्य बतलाती है।।

यह पुस्तक बड़ी अनूठी है,
नगीने जड़ी अंगूठी है।
इस दुनिया में क्या होता है?
सच ही कहती कब झूठी है।।

जिन खोजा तिन ही पाया है,
यह अक्षर ज्ञान की माया है।
अच्छी पुस्तक ही पढ़नी है,
गुरु जी ने समझाया है।।

लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

# भारत का राष्ट्रीय पशु बाघ

बाघ भारत का राष्ट्रीय पशु है। इसकी गणना विश्व के सर्वाधिक रोचक, आकर्षक और शानदार जीवों में की जाती है। बाघ का मूल स्थान साइबेरिया का बर्फीला क्षेत्र है। हिमयुग में यह सम्पूर्ण यूरेशिया में फैल गया। वर्तमान समय में यह केवल एशिया में पाया जाता है। बाघ की 8 प्रजातियां हैं। साइबेरिया का बाघ, कैस्पियन का बाघ, इंडोचीन का बाघ, भारत का बाघ, चीन का बाघ, सुमात्रा का बाघ, जावा का बाघ और बाली का बाघ। भारत में पाये जाने वाले बाघ को रॉयल बंगाल टाइगर कहते हैं। यही भारत का राष्ट्रीय पशु है।

बाघ के रहने और विकास के लिए तीन चीजें आवश्यक होती हैं– भोजन के लिए आसपास हिरण और जंगली सुअर जैसे बड़े जीव, आराम से सोने के लिए पर्याप्त छायादार एकान्त स्थान तथा पानी। इसमें सभी प्रकार की परिस्थितियों में रहने की अद्भुत क्षमता होती है। बर्फीले साइबेरिया क्षेत्र का यह जीव पथरीले पहाड़ी क्षेत्रों, घने जंगलों और दलदल वाले भागों तथा पानी से घिरे छोटे-छोटे द्वीपों में भी सरलता से रह सकता है, किन्तु रेगिस्तान के बहुत अधिक गर्म भागों में बाघ देखने को नहीं मिलता। बाघ अधिक गर्मी सहन नहीं कर पाता। यही कारण है कि यह दिन के समय गुफाओं, खंडहरों, लम्बी-लम्बी घासों के मध्य उथले पानी अथवा दलदल में पड़ा रहता है। बाघ बहुत अच्छा तैराक होता है। सिंह, तेंदुआ आदि बिल्ली परिवार के अन्य सदस्यों के समान इसे वृक्षों पर बहुत कम ही देखा गया है। कभी-कभी यह ऐसे वृक्षों पर चढ़ जाता है, जो जमीन पर बहुत झुके हुए होते हैं। बाघ काफी ऊँचाई तक छलांग लगा सकता है। यह वृक्षों पर बैठे हुए मानव को पकड़ने के लिए कई बार 6 मीटर तक ऊँची छलांग लगा चुका है। यह आश्चर्य, अशांति, सन्तुष्टि, चेतावनी आदि के समय अलग-अलग तरह की आवाजें निकालता है।

बाघ के विषय में यह कहा जाता है कि इसकी दृष्टि बहुत कमजोर होती है। यह एक भ्रामक तथ्य है। वास्तव में बाघ की दृष्टि मानव की दृष्टि से छः गुना अधिक तेज होती है।

बाघ विश्व में भारत, बांग्लादेश, चीन, रूस, कोरिया, थाइलैंड, म्यामार (बर्मा), इंडोनेशिया, मंगोलिया, ईरान, तुर्की आदि देशों में पाया जाता है। भारत में यह पंजाब, कच्छ और राजस्थान के रेगिस्तानी भागों को छोड़कर हिमालय से कन्याकुमारी तक सभी स्थानों पर, सदाबहार वनों, शुष्क एवं खुले जंगलो, तराई क्षेत्र के घास के मैदानों एवं दलदल वाले भागों में देखने को मिलता है। यह सुन्दरवन के जंगलों के दलदल, कीचड़ और पानी वाले भागों में एक उभयचर के रूप में रहता है। यहाँ इसे कभी-कभी वृक्षों पर भी देखा जा सकता है।

बाघ की शारीरिक संरचना सिंह से बहुत मिलती-जुलती है। इन दोनों के कंकाल में इतनी समानता होती है कि एक विशेषज्ञ जीव

वैज्ञानिक ही इनमें अन्तर बता सकता है। बाघ बिल्ली परिवार के सभी जीवों में सबसे बड़ा होता है। यह सिंह से भी बड़ा होता है, किन्तु सिंह से पतला होता है। इसकी सभी प्रजातियों के बाघ के आकार, रंग और धारियों के डिजाइन में काफी भिन्नता होती है। सामान्यतया बाघों का अध्ययन करने वाले बाघों के चेहरों की धारियां देखकर उन्हें पहचान लेते हैं।

विश्व का सबसे बड़ा और शक्तिशाली बाघ साइबेरिया का बाघ है। इसकी पूँछ सहित शरीर की लम्बाई 4 मीटर तक एवं वजन 290 किलोग्राम तक होता है। सुमात्रा का बाघ सबसे छोटा होता है। इसकी कंधों तक की ऊँचाई लगभग 75 सेंटीमीटर होती है। भारतीय बाघ साइबेरिया के बाघ से छोटा होता है। इसके शरीर की लम्बाई 3 मीटर, वजन 175 किलोग्राम से 250 किलोग्राम तक तथा कंधों तक की ऊँचाई लगभग एक मीटर होती है। बाघिन के शरीर की लम्बाई बाघ से लगभग 30 सेंटीमीटर कम होती है तथा इसका वजन भी बाघ से लगभग 45 किलोग्राम कम होता है। बाघ की त्वचा के रंग बड़े शानदार होते हैं। इसके शरीर का अधिकांश भाग भूरापन लिये हुए सुनहरे रंग का होता है तथा पेट और नीचे का भाग सफेदी लिये हुए मटमैले रंग का होता है।

बाघिन एक बार में 2 से लेकर 7 तक बच्चों को जन्म देती है। इसके बच्चों का जन्म के समय वजन एक किलोग्राम से डेढ़ किलोग्राम के मध्य होता है। इनकी आँखें बन्द रहती हैं तथा ये पूरी तरह असहाय होते हैं। बाघ के नवजात शावकों के शरीर पर जन्म से ही काली धारियां होती हैं। इनका डिजाइन इन्हें जन्म देने वाले बाघ और बाघिन की काली धारियों के समान होता है। बाघिन बच्चों को जन्म देने के बाद इन्हें दूध पिलाती हैं तथा इनकी सुरक्षा करती है। इस समय यह बड़ी हिंसक और उग्र दिखाई देने लगती है। बच्चों के पालन-पोषण में जन्म देने वाले नर बाघ की कोई विशेष भूमिका नहीं होती, अर्थात् केवल बाघिन ही बच्चों का पालन-पोषण करती है।

बाघ के नवजात शावक लगभग दो सप्ताह तक पूरी तरह असहाय से रहते हैं। चौदह दिन में इनकी आँखें खुल जाती हैं। ये लगभग 6 माह तक बाघिन का दूध पीते हैं और इसके बाद बहुत छोटे-छोटे जीवों का शिकार करने लगते हैं। बाघिन अपने शावकों को लगभग दो वर्षों तक अपने साथ रखती है और इन्हें शिकार करना सिखाती है।

❖

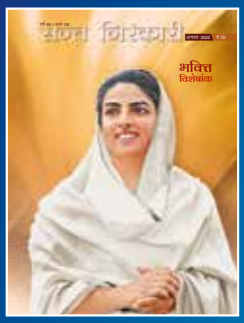


# सन्त निरंकारी

ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक

## इस पत्रिका में आप पढ़ सकते हैं:

- सत्गुरु वचनामृत
- तर्कपूर्ण लेख
- काव्य प्रवाह
- गीत माधुर्य
- जीवन दर्शन
- बाल वाटिका
- लोकगीत
- नारी शक्ति
- अमृत कलश
- सुनहरी यादें
- पुराने अंकों से

हिन्दी | पंजाबी | अंग्रेजी | मराठी | नेपाली | गुजराती | बांग्ला | तमिल | तेलुगू | कन्नड | ओड़िया

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

'पाक्षिक समाचार पत्र

# एक नज़र

**स्वयं भी पढ़ें, औरों को भी पढ़ायें**

मिशन की सामाजिक/आध्यात्मिक गतिविधियों की जानकारी

- विचार प्रवाह
- दार्शनिक लेख
- प्रेरक प्रसंग
- बाल जगत/खेल जगत
- गीत, कविताएं
- स्वास्थ्य
- नारी जगत

हिन्दी | पंजाबी | मराठी

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

बालकथा : कमल सोगानी

# समझदारी से मिलती है सफलता

चन्दू बन्दर उछलता-कूदता मोलू गधे के खेत पर पहुँचा। वहाँ वह एक इमली के पेड़ पर चढ़कर खेत का नजारा देखने लगा। पाँच गड्ढे पचास-पचास फुट के खुदे हुए थे तथा गोलू छठा गड्ढा खोद रहा था। गड्ढों को देखकर बन्दर ने मन में सोचा– 'आखिर यह मोलू खेत में इतने गड्ढे क्यों करवा रहा है, क्या इनमें कहीं खजाना तो नहीं छिपा?'

फिर वह पेड़ से नीचे उतरकर मोलू के पास आया और बोला– 'काका, खेत में इतने गड्ढे का आखिर राज क्या है? जरा मुझे भी तो बताओ?

मोलू बोला– हर वर्ष बरसात कम होने के कारण फसलों को पानी नहीं मिल पाता। इसी कारण मैंने ये चार कुएं खोदे हैं। चारों दिशाओं में जब उनमें पानी नहीं निकला तो मैंने पांचवा गड्ढा खोदा लेकिन जब उसमें भी पानी की एक बूंद नहीं निकली तो अब यह छठा कुआं खोद रहा हूँ, शायद इसमें पानी निकल आये?

सुनकर बन्दर को बड़ा ताज्जुब हुआ। मन में सोचने लगा कैसे अनाड़ी हैं? बिना सोच-समझे इसने खेत में जगह-जगह गड्ढे कर दिये। पूरे खेत का सत्यानाश कर दिया। फिर उसने पूछा– 'काका, जरा यह तो बताओ ये गड्ढे कितने गहरे हैं?'

मोलू गधा बोला– 'ये चालीस-चालीस फीट गहरे हैं। इन्हें मैंने पिछले साल खोदा था तथा एक गड्ढे की अभी खुदाई जारी है।'

अब चन्दू बन्दर ने खीं-खीं कर हँसते हुए कहा– 'काका, एक बात कहूँ यदि बुरा न मानो तो?'

–हाँ, हाँ बोलो, क्या बात है?

–काका। आप दुनिया के सबसे बड़े मूर्ख हैं। यह आपने गड्ढे खोदकर अच्छी तरह साबित कर दिया है?

–भला मैं मूर्ख क्यों हुआ? मैंने तो अपनी कड़ी मेहनत से भूख-प्यास एक कर ये गड्ढे खोदे हैं।

अब बन्दर ने सुझाव दिया– काका, तुम इतने गड्ढों के बदले सिर्फ एक ही कुआं खोदते तो उसकी गहराई कम से कम नब्बे-सौ फुट रखते तो उसमें निश्चित ही पानी निकल आता। इस तरह तुम्हें अन्य गड्ढे खोदने के लिए मेहनत भी नहीं करनी पड़ती तथा खेत की जमीन भी बेकार नहीं होती। हाँ, जीवन में कोई भी कार्य करने से पूर्व उसकी सही रूप-रेखा बनाओ और एक लक्ष्य लेकर चलो। इससे निश्चित सफलता मिलती है। बिना लक्ष्य वालों को कभी सफलता नहीं मिलती। इतना कहकर वह पेड़ पर उछलकर जा बैठा और इमलियां खाने लगा। ❖

# क्या आप जानते हैं?

- पृथ्वी पर अब तक पाया जाने वाला सबसे बड़ा जानवर है– नीली व्हेल। इसका भार लगभग 150 टन होता है। ये इतनी लम्बी होती है कि इसकी पीठ के ऊपर एक कतार में 8 हाथी खड़े हो सकते हैं। इसकी लम्बाई 30 मीटर तक हो सकती है।
- व्हेल शार्क विश्व की सबसे बड़ी मछली है। इसकी लम्बाई 15 मीटर और भार लगभग 40 टन होता है।
- शुतुरमुर्ग विश्व का सबसे लम्बा तथा भारी पक्षी है। इसकी लम्बाई 2.5 मीटर तक होती है।
- जिराफ पृथ्वी पर पाया जाने वाला सबसे लम्बा जानवर है। अपनी लम्बी गरदन के कारण यह एक-दो मंजिला इमारत की ऊँचाई तक पहुँच सकता है। इसकी लम्बाई लगभग 5.5 मीटर होती है।
- रेटिकुलेटिन पायथन (अजगर) 10 मीटर तक लम्बा हो सकता है।
- पतंगे का जीवनकाल मात्र 24 घंटों का होता है।
- किसी व्यक्ति की पहचान करने के लिए उसके 'फिंगर प्रिंट' यानी अंगुलियों के निशान लिये जाते हैं। अगर किसी कुत्ते की पहचान करनी हो तो उसकी 'नोजप्रिंट' यानी नाक के प्रिंट लिए जाते हैं।
- केकड़े के दांत पेट में ही होते हैं।
- ऑक्टोपस की आँखों की पुतली आयताकार होती हैं।
- जिस दिन पूरा चाँद निकलना होता है उस दिन सूर्यास्त होते ही चाँद का निकलना शुरू हो जाता है।

**प्रस्तुति : ऊषा सभरवाल**

कविता : शंकर लाल माहेश्वरी

# पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरण गर बिगड़ गया तो,
जीवन सबका दुखी रहेगा।
रोगग्रस्त होकर जीवन में,
हर मानव भी दुखी रहेगा।।

वायु विषैली हो गई सारी,
दूषित है पीने का पानी।
खान पान की सभी वस्तुएं,
जीने की है आस मिटाती।।

जल को दूषित कर डाला है,
नदियां सारी हुई विषैली।
गंदे नालों का जल लेकर,
नदियां भी अब हो गई मैली।।

पेड़ लगाकर पर्यावरण को,
बचा सको तो अभी बचाओ।
वृक्षों को अब काट-काटकर,
और अधिक मत पाप कमाओ।।

पर्यावरण की रक्षा करके तुम,
अपना पावन कर्तव्य निभाओ।
हरियाली को और बढ़ाकर,
जीवन सबका सुखी बनाओ।।

वृक्ष लगाओ जल बचाओ,
इसी से जीवन सुखी बनेगा।
जन सेवा के इस अभियान से,
जन जन को आराम मिलेगा।।

किट्टी
चित्रांकन एवं लेखन : विकास कुमार
बच्चों! बताओ मैंने किसका चित्र बनाया है?
मैडम जी, यह तो पहिया है।
लकड़ी का पहिया!
तुमने ठीक कहा किट्टी– यह पहिया ही है। किट्टी, जो रबड़ के पहिये तुम आजकल कारों, बसों और साइकिल में देख रहे हो। ऐसे पहिये प्राचीनकाल में लकड़ी से बनाए जाते थे।

मैडम जी, लकड़ी के पहिये का आविष्कार कब हुआ था?
लकड़ी के पहिये का आविष्कार सबसे पहले मेसोपोटामिया (पश्चिमी एशिया) में हुआ था। सुमेरियन सभ्यता काल में ईसा से 3500 वर्ष पहले इस पहिये को लकड़ी के कई तख्तों को जोड़कर बनाया था।
मैडम जी, पहिये का विकास कैसे हुआ? कृपया बतायें।
लकड़ी के पहिये का विकास समय के साथ कई चरणों में हुआ।
जी, मैडम।
प्राचीनकाल में भारी वस्तुओं को आसानी से ले जाया जा सके इसके लिए भारी वस्तुओं के नीचे रोलर्स (लकड़ी के गोल लट्ठे) रखे जाते थे।

टीचर जी, स्लेज तो बर्फीले इलाकों में ही चलती है न।
उन लोगों ने वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने के लिए स्लेज का आविष्कार किया।
उस स्लेज को रोलर के ऊपर रखकर चलाने की कोशिश की गई।
टीचर जी, पहिये की खोज तो काफी मजेदार है।
उसके बाद स्लेज के नीचे लगे रोलर्स का उपयोग पहिये के रूप में होने लगा। अब रोलर्स पर गहरे खांचे बनाकर स्लेज को काफी दूरी तक ले जाया जाने लगा।

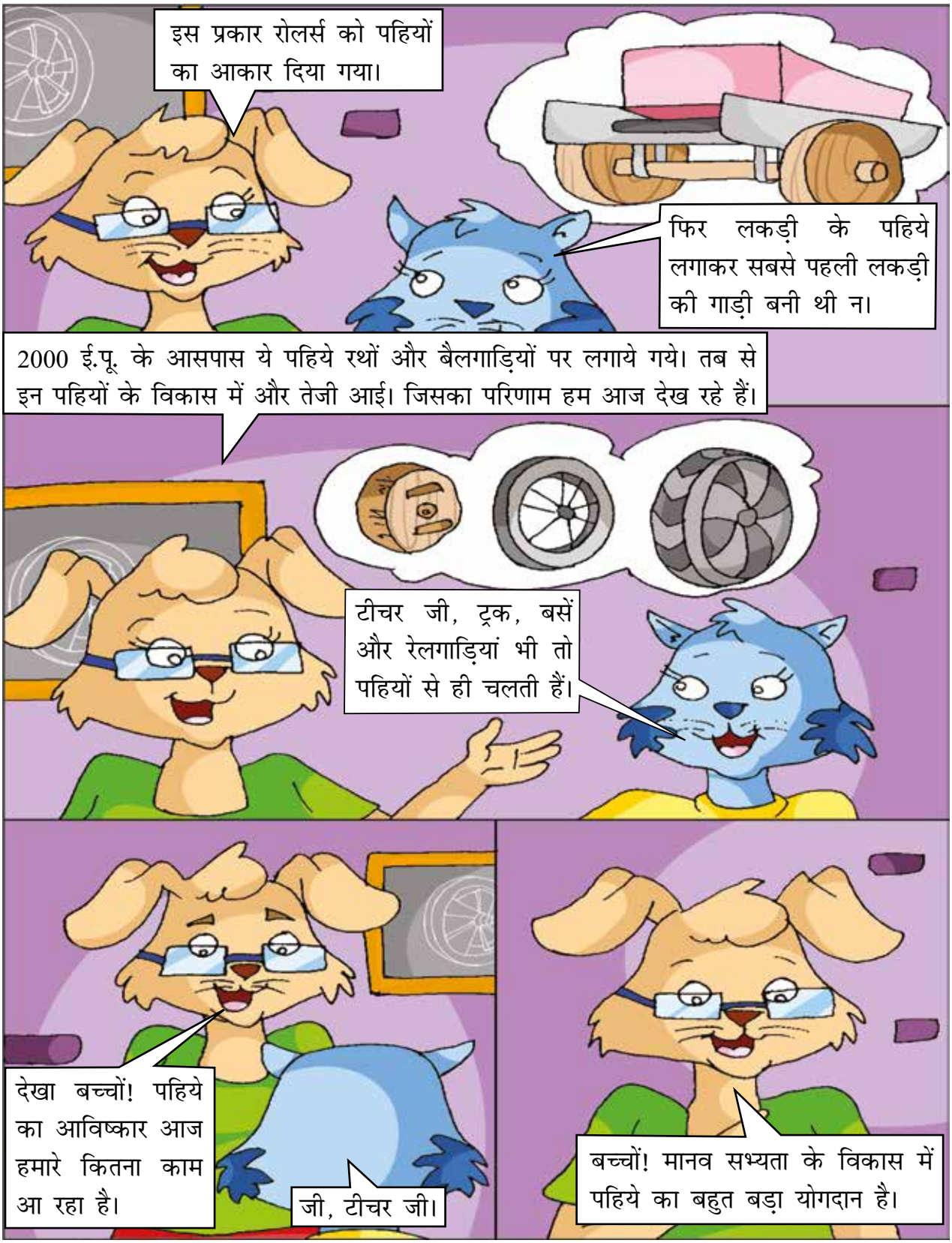
इस प्रकार रोलर्स को पहियों का आकार दिया गया।
फिर लकड़ी के पहिये लगाकर सबसे पहली लकड़ी की गाड़ी बनी थी न।
2000 ई.पू. के आसपास ये पहिये रथों और बैलगाड़ियों पर लगाये गये। तब से इन पहियों के विकास में और तेजी आई। जिसका परिणाम हम आज देख रहे हैं।
टीचर जी, ट्रक, बसें और रेलगाड़ियां भी तो पहियों से ही चलती हैं।
देखा बच्चों! पहिये का आविष्कार आज हमारे कितना काम आ रहा है।
जी, टीचर जी।
बच्चों! मानव सभ्यता के विकास में पहिये का बहुत बड़ा योगदान है।

– संग्रहकर्ता
हरजीत निषाद

# कभी न भूलो

❖ जो बालक परिश्रम करते हैं, वे सदा सफल होते हैं। इस बात को याद रखें। जब तक तुम कठिन परिश्रम करना नहीं सीखते तब तक तुम्हें सफलता की आशा नहीं करनी चाहिए, सफलता के लिए दृढ़निश्चय और कठिन मेहनत की आवश्यकता है। **– सूक्ति**

❖ दिमाग में भरे हुए ज्ञान का जितना अंश काम में लाया जाए, उतने का ही कुछ मूल्य है। बाकी सब व्यर्थ बोझ है।

❖ ईश्वर सर्वशक्तिमान है उसकी दया उसकी अच्छाई तथा उसके न्याय का पार नहीं है। उसके अनुयायी नीतिमार्ग का परित्याग कर ही नहीं सकते। **– महात्मा गाँधी**

❖ वृक्ष अपने सिर पर सूर्य की प्रचण्ड धूप सहता है किन्तु अपने आश्रितों की गर्मी अपनी छाया द्वारा दूर करता है।**– कालिदास**

❖ जो हर किसी की प्रशंसा करता है, वह किसी की भी प्रशंसा नहीं करता। **– जॉनसन**

❖ जीतता वह है जिसमें शौर्य होता है, धैर्य होता है, साहस होता है, सत्य होता है और धर्म होता है। **– हजारीप्रसाद द्विवेदी**

❖ सत्य परायण मनुष्य किसी से घृणा नहीं करता। **– महात्मा बुद्ध**

❖ जीवन का वास्तविक सुख, दूसरों को सुख देने में है, उनका सुख लूटने में नहीं।
**– मुंशी प्रेमचन्द**

❖ सहानुभूति एक ऐसी विश्वव्यापी भाषा है जिसे सभी प्राणी समझते हैं। **– जेम्स एलेन**

❖ समृद्धियां पराक्रमी मनुष्य के साथ रहती हैं, अनुत्साही मनुष्य के साथ नहीं। **– भारवि**

❖ मनुष्य के संकल्प के सम्मुख देव, दानव सभी पराजित हो जाते हैं। **– इमर्सन**

❖ चन्द्रमा अपना प्रकाश सारे आकाश में फैलाता है परन्तु कलंक अपने भीतर रखता है।
**– रवीन्द्रनाथ टैगोर**

❖ मनुष्य के मन में सन्तोष होना स्वर्ग प्राप्त करने के समान है। **– महर्षि वेदव्यास**

❖ मूर्ख को मूर्खता के अनुरूप उत्तर न दो, नहीं तो तुम भी उसी के अनुरूप हो जाओगे।
**– तुलसीदास**

❖ जो तुम्हें बुराई से बचाता है, नेक राह पर चलाता है और मुसीबत के समय तुम्हारा साथ देता है, वही तुम्हारा सच्चा मित्र है।
**– तिरुवल्लुवर**

❖ मुसीबतों को हौंसले से झेलो, इनसे घबराना अपने काम को बिगाड़ना है। मुसीबत में ही आदमी का इम्तिहान होता है।
**– लाला लाजपतराय**

❖ सफल इन्सान बनने की कोशिश करने की बजाए सिद्धान्तों वाला इन्सान बनने की कोशिश कीजिए। **– अल्बर्ट आइंस्टीन**

कविता : अमृत 'हरमन'

# हमारा सौरमंडल

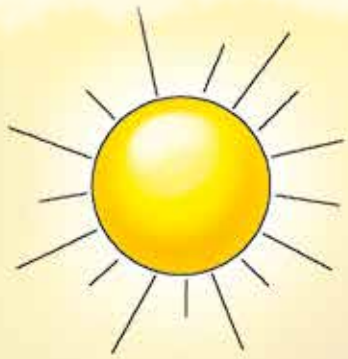

आओ बच्चों आज पढ़ें,
हम सौरमंडल का पाठ।
सूरज है परिवार का मुखिया,
कुल ग्रह हैं इसके आठ।।

परिक्रमा सूरज की देखो,
लगातार सब हैं करते।
अपनी-अपनी कक्षा में,
सब चक्कर काटा करते।।

बुध है सबसे निकट सूर्य के,
शुक्र का नम्बर दूजा।
तीजे पर पृथ्वी है अपनी,
इस जैसा न ग्रह दूजा।।

चौथा मंगल, पांचवा बृहस्पति,
शनि है छठे नम्बर पर।
यूरेनस सातवें स्थान पर है,
नेप्च्यून है आठवें नम्बर पर।।

कितना विशाल है सौरमंडल,
कैसे अब तुमको बताएं।
कितने सौरमंडल हैं ऐसे,
वैज्ञानिक भी गिन न पाएं।।

बाल कविता : डॉ. विजय प्रकाश

# प्यारी धरती

ऊँचे-ऊँचे पर्वत वाली,
हरी-भरी मैदानी धरती।
हमको अन्न खिलाती धरती,
सारे जग से प्यारी धरती।।

मीठा पानी रोज पिलाती,
भारत माँ है प्यारी धरती।
हम बेटों की माता धरती,
सदियों से यह नाता रखती।।

कल-कल स्वर में गाती रहती,
प्यारे गीत सुनाती धरती।
चाँदी, सोना, हीरा धरती,
भारत माता प्यारी धरती।।

बाल कहानी : नीलम ज्योति

# कहानी चीन की विशाल दीवार की

''नमस्ते! मैं नलिनी हूँ। आपके बारे में जानना चाहती हूँ।'' चीन की विशाल दीवार से नलिनी ने कहा।

''नमस्ते, नलिनी! तुम्हारा स्वागत है। बोलो, क्या जानना चाहती हो?'' दीवार से आवाज आई।

नलिनी ने कहा, ''आप अपने बारे में कुछ बताएं। मैं तो बस यह जानती हूँ कि दुनिया के सात अजूबों में आप शामिल हैं। लोगों से आपके बारे में बहुत कुछ सुना है पर आपके मुँह से आपकी कहानी सुनना चाहती हूँ।''

कुछ सोचकर चीन की दीवार ने बोलना शुरू किया, ''आज से दो हजार साल पहले चीन में 'किन शी हुआंगदी' का राज्य था। उन्होंने ही मुझे बनवाना शुरू किया था। चीन में मुझे 'वान ली चांग चेंग' कहा जाता है। इसका मतलब है– दस हजार ली लम्बी दीवार।''

नलिनी ने पूछा, ''दस हजार ली का क्या मतलब है?''

''पाँच हजार किलोमीटर।'' चीन की दीवार ने बताया।

नलिनी ने आगे पूछा, ''क्या आप अपनी चौड़ाई एवं ऊँचाई के बारे में भी कुछ बताएंगी?''

दीवार बोली– ''हाँ-हाँ, क्यों नहीं। मेरी चौड़ाई साढ़े चार से नौ मीटर तक है और ऊँचाई साढ़े सात मीटर है। जानती हो मुझे बनाने में कितना समय लगा?''

''नहीं, आप ही बताइए।'' नलिनी बोली।

''असल में मुझे एक दीवार न कहकर, कई

दीवारों की कड़ी कहा जाए तो ठीक रहेगा। मैं अलग-अलग राजाओं के समय में करीब एक हजार साल में बनकर तैयार हुई हूँ।'' चीन की दीवार ने बताया। वह आगे बोली– ''मैं अपने देश की दुश्मन राज्यों से रक्षा करती आई हूँ। मैंने सुना है कि मैं आसमान और अंतरिक्ष से भी दिखाई देती हूँ।'' मुस्कुराते हुए चीन की दीवार ने कहा।

नलिनी ने कहा, ''आप ठीक कर रही हैं। पिता जी ने बताया था कि आप अंतरिक्ष से भी दिखती हैं।''

खुश होते हुए चीन की दीवार बोली– ''मेरे उत्तर की ओर हुआंग का खुला मैदान है। दक्षिण की ओर पेड़ों और झाड़ियों से ढकी हुई पहाड़ियां हैं।''

नलिनी ने चीन की दीवार की तारीफ करते हुए कहा– ''सचमुच, आप बहुत महान हैं। तभी तो आप 'ग्रेट वॉल ऑफ चाइना' कहलाती हैं।

नलिनी ने चीन की दीवार को धन्यवाद कहा। फिर नमस्कार कर उसको निहारते हुए चली गई।

❖

## पहेलियों के उत्तर :

1. विद्या, 2. बाँसुरी, 3. तखत,
4. हीरा, 5. घड़ी, 6. कैरम,
7. टी.वी. 8. कलम, 9. सूर्य, 10. चन्द्रमा।

स्वास्थ्यवर्द्धक लेख : परिधि जैन

# गुणों की खान आंवला

आंवला को हमारे पूर्वजों ने 'धात्रीफल' का नाम दिया है अर्थात् जो मानव का धाय की तरह पालन-पोषण करे।

आंवले का प्रयोग भोजन में करने से जहाँ हमारा स्वास्थ्य अच्छा बना रहता है। वहीं यह हमें अनेक बीमारियों से बचाता भी है क्योंकि आंवले में विटामिन 'सी' अधिक मात्रा में होता है। कुछ व्यक्ति तो आंवला कच्चा ही खा लेते हैं। इसका स्वाद कसैला होता है। कच्चे आंवले की चटनी स्वादिष्ट बनती है। औषधि के रूप में भी इसका प्रयोग किया जाता है। बालों के लिए आंवला वरदान है। इसके नियमित प्रयोग से बाल काले, घने व लम्बे होते हैं। आंवले की तासीर ठंडी होती है। इसलिए सर्दियों में सुबह धूप के सेवन के साथ इसका मुरब्बा खाने से विटामिन 'सी' और विटामिन 'डी' दोनो ही शरीर को प्राप्त हो जाते हैं।

शीत ऋतु और शरद ऋतु को हमारे घरों की किवदंतियों और चिकित्सकीय मतों से 'हेल्दी सीजन' (स्वास्थ्यवर्द्धक मौसम) कहा जाता है। इस मौसम में शकरकंद, अमरुद, मूंगफली, अदरक, हल्दी, टमाटर, गाजर आदि प्रकृति के अमूल्य उपहार के रूप में हमें प्राप्त होते हैं। सभी चीजें अपनी उत्तमता के लिए स्वास्थ्य के लिए वरदान हैं। इन सभी फलों में औषधीय गुणों से ओतप्रोत फल आंवला है, जो हमें सिर्फ शीतऋतु में ही प्राप्त है। विटामिन 'सी' से भरपूर यह फल सुखाने, गर्म करने, पकाने या चूर्ण रूप में सुरक्षित रखने पर भी अपने विटामिनों का मूल स्वरूप जीवंत रखता है। इसे आप अचार, चटनी या मुरब्बा अथवा अन्य किसी रूप में सुरक्षित करके, किसी भी मौसम में उपयोग कर सकते हैं। शीतऋतु में सुरक्षित आंवले से बने पदार्थों का गर्मी में सेवन अमृत के समान होता है। यह नेत्र ज्योति के लिए बढ़िया है ही, इसी के साथ हृदय धमनियों के अवरोध को दूर कर रक्त प्रवाह को नियमित रखने, शरीर के अन्य अवयवों की गर्मी को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यही इसकी सर्वकालिक उपयोगिता है।

आंवले को हम वैज्ञानिक कसौटी पर विश्लेषित करें तो पाएंगे कि प्रति 100 ग्राम आंवले में 600 मिलीग्राम विटामिन 'सी' रहता है। इसके अलावा प्रोटीन, वसा, रेशा, कैल्शियम, खनिज लवण, फास्फोरस, लोहा अन्य फलों की तुलना में आंवला में अधिक रहता है। एक आंवले में 2 संतरे या पांच केलों के बराबर विटामिन 'सी' रहता है। रक्त विकार दूर करने में आंवला जैसा कोई दूसरा फल नहीं होता है। अपनी ठंडी तासीर के कारण यह रक्त की गर्मी व चित्त के दोषों को तो दूर करता ही है, मस्तिष्क व हृदय की कोशिकाओं को भी दुरुस्त रखता है। भोजन से पहले या भोजन के बाद किसी भी रूप में आंवले का सेवन लाभदायक होता है। यह पायरिया रोग को रोकने में सक्षम है। इसके बारीक सूखे चूर्ण को मंजन के रूप में उपयोग में लाने से दांत मजबूत एवं चमकदार तो होंगे ही, साथ ही मुँह की बदबू से भी आपको छुटकारा मिल जाएगा।

**आंवले को औषधीय रूप में प्रयोग करने के कुछ उपाय इस प्रकार हैं–**

- आंवला चूर्ण एक चम्मच रात को सोते समय पानी के साथ लेने से या शहद के साथ चाटने से कब्ज की शिकायत दूर होती है।
- आंवले का नियमित प्रयोग बवासीर और कृमि भी नष्ट करता है।
- आंवले को कुचलकर रस निचोड़ लें। रस एवं नारियल तेल समान मात्रा में मिलाकर धीमी आंच पर पकाएं। जब पानी की मात्रा जल जाए तो नीचे उतारकर ठंडा करके छान लें। इसे बालों में लगाएं, बाल स्वस्थ रहेंगे।
- आंवले की चटनी बनाकर खाने से विभिन्न रोग दूर होते हैं।
- आंवला पाउडर और मुलहठी खाली पेट लेने से खांसी, बलगम से आराम मिलता है।
- आंवला पाउडर व धनिया पाउडर समान मात्रा में शहद के साथ लेने से गर्मी से सिरदर्द व चक्कर आने से छुटकारा मिलेगा।

यदि हम आंवले का प्रतिदिन प्रयोग करें तो हम स्वस्थ, सुन्दर बने रहेंगे। आंवले का प्रतिदिन प्रयोग सोने में सुहागा का काम करता है।

## आओ, एक-एक की इकाई जानें

- आवाज की नाप की इकाई– डेसीबल है।
- शक्ति की इकाई– कैलोरी है।
- एक्सरे की तरंग गति का नाम– एंगस्ट्रॉम है।
- खगोलीय नक्षत्रों की दूरी– प्रकाशवर्ष है।
- ताप को डिग्री/केल्विन में नापते हैं।
- एक सेकेंड में एक घन फुट पानी के बहने की रफ्तार को क्यूसेक कहते हैं।
- समय की प्राथमिक इकाई– सेकेंड है।
- अणु बम की ऊर्जा शक्ति टी.एन.टी. में मापी जाती है।
- मशीन के कार्य करने की शक्ति हार्सपावर (अश्व शक्ति) में नापी जाती है।
- मनुष्य की नाक का रंग ही उसके शरीर की त्वचा का मानक रंग माना जाता है।

**– प्रस्तुति : विभा वर्मा**

## तीन बातें

- तीन का आदर करना न भूलो– माता, पिता और गुरु।
- तीन चीजें कोई चुरा नहीं सकता– विद्या, हुनर और अक्ल।
- तीन चीजें व्यक्ति को शर्मिंदा करती हैं– चोरी, चुगली और झूठ।
- तीन बुरी बातों से हमेशा दूर रहने का प्रयत्न करें– बुरी संगत, निंदा और स्वार्थ।
- तीन चीजों को सुख के लिए त्यागना चाहिए– क्रोध, लोभ और मोह।

**संग्रहकर्ता : एम. के. मजगे**

# पढ़ो और हँसो

अपने गले का ऑपरेशन होते ही गोलू ने पानी-पानी की रट लगा दी।

नर्स परेशान थी। उसने कभी ऐसा मरीज नहीं देखा था जिसे ऑपरेशन होते ही प्यास लग जाए।

वह गोलू को पानी का गिलास थमाते हुए बड़बड़ाई– ऐसी भी क्या प्यास है, जरा-सा भी सब्र नहीं है?

गोलू बोला– सिस्टर प्यास नहीं लगी है। मैं तो यह चेक करना चाहता हूँ कि ऑपरेशन के बाद मेरा गला लीक तो नहीं कर रहा है।

टीचर : बताओ बच्चो, वास्कोडिगामा भारत में कब आया था?

राजू : जी, सर्दियों में आया था।

टीचर : बुद्धू हो क्या? तुम्हें किसने बताया कि वह सर्दियों में आया था।

राजू : मैंने किताब में फोटो देखी थी, उसने कोट पहन रखा था।

माँ : (रोहित से) उठ जा आलसी, सूरज कब का निकल आया है।

रोहित : तो क्या हुआ माँ, वो सोता भी मुझसे पहले है।

पप्पू पंखा खरीदने गया।

पप्पू : दो पंखे देना।

दुकानदार : कौन से दूँ?

पप्पू : एक लेडीज और एक जेंट्स दो।

दुकानदार : पंखों में लेडीज, जेंट्स नहीं होता।

पप्पू : कैसे नहीं होता? एक ऊषा का और एक बजाज का दो।

छोटू पहली बार ट्रेन में सफर करने वाला था। तभी घोषणा हुई– बिना टिकट सफर करने वाले यात्री होशियार।

इसी बीच छोटू बोल पड़ा– अरे वाह! बिना टिकट सफर करने वाले यात्री होशियार और हमने टिकट ली तो हम बेवकूफ।

अध्यापक: (विद्यार्थी से) तुम रोज खाना खाकर मुँह क्यों नहीं धोते? मैं तुम्हारा मुँह देखकर बता सकता हूँ कि आज तुमने क्या खाया है?

विद्यार्थी : बताइये सर! मैंने क्या खाया है?

अध्यापक: दही बड़े।

विद्यार्थी : नहीं सर! वह तो कल खाये थे।

– गुरमीत सिंह (इन्दौर)

एक बच्चा पैदा हुआ और नर्स उसे नहलाने लगी तो बच्चा बोल पड़ा– सिस्टर, जरा मोबाइल देना तो।

सिस्टर : किसलिए?

बच्चा : जरा फोन करके बता दूँ कि मैं ठीक-ठाक से पहुँच गया हूँ।

मोहन : (सोहन से) यार पता नहीं लोग एक-एक महीने तक बिना नहाये कैसे रह जाते हैं?

सोहन : क्यों क्या हुआ?

मोहन : क्योंकि मुझे तो बीस दिन में ही खुजली होने लगती है।

उमेश : आज मेरी किसी ने जेब काट ली।

सुरेश : तो पुलिस में रिपोर्ट करो।

उमेश : लेकिन गलती कर दी मैंने।

सुरेश : क्या?

उमेश : जेब काटने के तुरन्त बाद मैंने दरजी से जेब सिलवा ली।

अतुल : अरे भई तुमने तालाब में डूबते बच्चे को डूबने से बचाया और फिर बाहर निकालकर उसे मारा क्यों?

निखिल : अरे जब वहाँ सामने साफ लिखा था कि 'तैरना मना है' तो फिर वह तैरने क्यों गया?

– निशा चौधरी (जम्मू)

सूखाग्रस्त क्षेत्र की एक चुनाव सभा में भाषण करने के पूर्व एक नेता ने अपने सैक्रेटरी से पूछा– लोगों को क्या आश्वासन दिया जाए?

सैक्रेटरी तत्काल बोला– इस इलाके में बहुत सूखा पड़ता है। आप फौरन बारिश का आश्वासन दे डालिए।

डॉक्टर : (मरीज से) तुम बहुत कमजोर हो तुम्हें छिलके सहित फल खाने की आवश्यकता है।

मरीज : ठीक है डॉक्टर साहब। दूसरे दिन

डॉक्टर : (मरीज से) अब तुम घर जा सकते हो।

मरीज : डॉक्टर साहब। मेरे पेट में दर्द हो रहा है।

डॉक्टर : क्या खाया था?

मरीज : छिलके सहित नारियल खाया था।

मंटू : (पिता से) पिताजी, दरवाजे पर लोग स्वीमिंग पुल के लिए चन्दा मांग रहे हैं?

पिता : बेटा, कोई बात नहीं। उन्हें एक लोटा जल दे दो।

– आकाश मेघानी (गोंदिया)

लेख : फेनम सोगानी

# टेलर बर्ड

टेलर बर्ड एक खूबसूरत चिड़िया है। वैसे इसे गाने वाली चिड़िया के नाम से भी जाना जाता है। यह मजे से पेड़-पौधों और बेलों पर फुदकती फिरती 'टोविट-टोविट' या 'प्रेटी-प्रेटी' की आवाज निकालती रहती है।

यह चिड़िया चीन, मलाया, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका के घने जंगलों में पाई जाती है। यह पेड़ों पर अपना खूबसूरत घोंसला बनाती है।

यह चिड़िया गोरैया से थोड़ी छोटी किन्तु साहसी, जैतूनी हरे रंग की चिड़िया है। इसका घोंसला प्याले के आकार का होता है। यह अधिकतर अपने घोंसले हरे भरे घने पेड़ पर बनाती है। घोसले का मुँह ऊपर, नीचे या बगल में होता है। घोसले का निर्माण नर व मादा दोनों मिलकर करते हैं। इस घोंसले को ऊन, रेशमी धागे, रस्सी के टुकड़ों, जंगली सूखी घास से कलात्मक ढंग से बनाया जाता है।

इस चिड़िया की गर्दन में काली लकीरें होती हैं। आँखों की पुतलियां पीली होती हैं। पैर पीलापन लिए हुए भूरे होते है व चोंच सुर्ख गुलाबी व नुकीली होती है। इसके पंख पर पीले-पीले धब्बे बने होते हैं।

इस चिड़िया का पसंदीदा भोजन मीठे-मीठे फल-फूल, शहद, कीड़े-मकोड़े, नरम-मुलायम पत्ते व जंगली घास है।

यह अगस्त के महीने में अंडे देती है। अंडों का रंग पीला गुलाबी होता है जिन पर कत्थई चित्तियां होती हैं। अंड़े में से बच्चे 3 से 4 सप्ताह के मध्य निकलने लगते हैं।

इस चिड़िया को प्रकृति के रंग-बिरंगे फूलों से बड़ा प्यार है। यह जहाँ भी ढेर सारे खिले फूलों को देखती है, तुरन्त पहुँच जाती है और फूलों के बीच बड़ी मस्ती से फुदकने लगती है। फुदकते-फुदकते अपने मधुर कंठ से ऐसी आवाजें निकालती है, जैसे कोई बांसुरी को धीमे-धीमे बजा रहा हो। देर तक इसकी मीठी-मीठी आवाजें सुनने पर ऐसा लगता है- मानों कोई जंगल में बांसुरी बजाकर प्रकृति की सुन्दरता की तारीफ कर रहा हो। वैसे इस चिड़िया को टुनटुनी भी कहते हैं। नर टुनटुनी का रंग गहरा हरा होता है तथा यह मादा टुनटुनी चिड़िया से औसतन 2-3 इंच लम्बा होता है।

इस चिड़िया की उम्र 3-4 बरस की होती है। बुढ़ापे में इसकी गर्दन पर दाढ़ी में श्वेत बाल आने लगते हैं और धीरे-धीरे इसे दिखाई देना बन्द हो जाता है। जैसे ही यह पूरी अंधी होती है उसके 5-7 दिनों उपरांत ही यह अपना शरीर त्याग देती है।

इस चिड़िया की कुछ प्रजातियां दक्षिण अमेरिका, स्पेन, केनिया व ब्राजील में भी दिखाई देती हैं। जो अपने रंग-रूप के लिए चर्चित हैं।

कविता : राजेश चौधरी

# समय

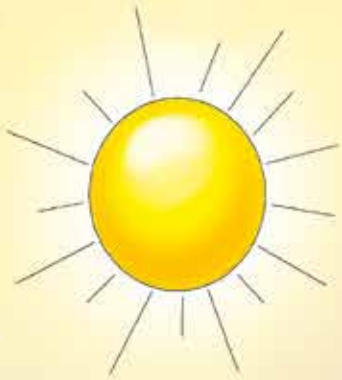

मेरा नाम समय है भाई,
मैं चलता ही रहता।
मुझ पर बीते कितने दुख-सुख,
नहीं किसी से कहता।।

मैं रूकने का नाम न लेता,
आज और कुछ, कल कुछ होता।
पल भर भी विश्राम न करता,
सब सोते मैं कभी न सोता।।

मैंने देखे कितने ही युग,
संवत्, साल, महीने और दिन।
देखा कभी किसी का वैभव,
देखा कभी किसी का दुर्दिन।।

हर युग का इतिहास हमारा,
कब इस जग पर क्या-क्या बीती?
कहाँ किस समय घटित हुआ क्या?
कौन लड़ाई हारी-जीती?

मुझसे चलना सीखो भाई,
मेरी कीमत जानो।
मूल्यवान मेरा हर क्षण है,
मुझको तो पहचानो।।

बीत गया जो कभी न लौटा,
बीत रहा जो उसे न छोड़ो।
आलस में मत मुझको खोओ,
कर्म-पथ से पांव न मोड़ो।।

## सितम्बर अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. **मानवी बंसल** — 13 वर्ष
   बंसल इंटरप्राइजेज, मेन बाजार,
   मंदिर चौक, लहरागागा,
   जिला : संगरूर (पंजाब)
2. **यशिका पंजवाणी** — 13 वर्ष
   झूलेलाल सोसाइटी,
   भुरावाव चार रास्ता, एफसीआई
   गोदाम के सामने, गोधरा (गुजरात)
3. **मुस्कान रूपानी** — 9 वर्ष
   झूलेलाल सोसाइटी, एफसीआई
   गोदाम के सामने,
   गोधरा (गुजरात)
4. **कुश मूलचंदानी** — 8 वर्ष
   झूलेलाल सोसाइटी, लुनावाडा रोड,
   एफसीआई गोदाम के सामने,
   गोधरा (गुजरात)
5. **ओम सोमजनी,** — 15 वर्ष
   योगेश्वर सोसाइटी, सोमनाथ नगर,
   गोधरा (गुजरात)

### इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

आलिया प्रवीण (उरैन, लखीसराय), अक्षरा सिंह (प्रयागराज), रेहान (बलदेव नगर, अम्बाला) मोक्ष, हार्दिक ईरानी, यशिका, मुस्कान, हार्दिक मूलचंदानी, शिव, अनंत, मंथन, हनिशा, भविका, सुमित, प्रनीत जोशी (गोधरा), वंदिता, अक्षित कुमार, जीत सिंह, पुष्पित कुमार, सक्षम कुमार, सुमित, निम्रत सिंह, नितिन, लखन, सिमरन, सार्थक, समदिशा, कुसुमप्रीत कौर, ईशान, नवदीश, सदभावना, कोमल, हरसिमरत कौर, नैतिक, मनजीत कौर (बठिण्डा)।

## दिसम्बर अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर **10 जनवरी** तक कार्यालय **'हँसती दुनिया'**, निरंकारी कॉम्पलेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **मार्च 2023 अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

# रंग भरो

नाम : ..... आयु : .....

पिता का नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन कोड : .....

# आपके पत्र मिले

आज हम हँसती दुनिया का जो वर्तमान स्वरूप देख रहे हैं। ये आप सबकी मेहनत और सत्गुरु की कृपा है।

सत्गुरु कृपा करे कि संसार के हर कोने में हँसती दुनिया पहुँचे ताकि सभी इससे लाभ ले सके। वैसे हँसती दुनिया इस मार्ग पर धीरे-धीरे अग्रसर हो रही है।

इसमें प्रकाशित कविताओं को मैं बड़े शौक से पढ़ता हूँ। हर दफा कविताएं मन लुभा लिया करती हैं। – रोशन पुष्पेन्द्र (गजरौला)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। इस पत्रिका को बड़े ही चाव से पढ़ता हूँ। मुझे इसमें खासतौर पर 'सबसे पहले', 'पढ़ो और हँसो' तथा कहानियां बेहद पसन्द हैं।

– प्रवीण कुमार (हाजीपुर, दरभंगा)

मैं हँसती दुनिया की पुरानी पाठक हूँ। यह पत्रिका ज्ञानवर्द्धक, मनोरंजक और शिक्षाप्रद है। इसमें प्रकाशित होने वाले कुछ स्तम्भ जैसे 'अवतार बाणी' तथा लेख बहुत ही जानकारीपूर्ण होते हैं। मैं यह पत्रिका नियमित रूप से अपने परिवार के साथ पढ़ती हूँ।

– निर्मल कौर (राजनगर, दिल्ली)

हँसती दुनिया का सितम्बर अंक पढ़ा। बहुत ही बोधगम्य लगा।

हँसती दुनिया में कहानियां एवं प्रेरक-प्रसंग बहुत ही शिक्षाप्रद होते हैं। बाल मन पर इनका अच्छा प्रभाव पड़ता है। – अंबले बाबूराव (कर्नाटक)

जीव-जगत (लेख) : ऋषि मोहन श्रीवास्तव

# पपीहा
## चालाक पक्षी

पपीहा एक चतुर और समझदार पक्षी है। यह कोयल की तरह चालाक है। मादा पपीहा अपने अंडे 'चरख' नामक पक्षी के घोंसले में रख आती है। चरख उन अंडों को अपना समझता है और इसलिए उन्हें सेता है परन्तु जब अंडों से बच्चे निकलते हैं और वे उड़ने लायक हो जाते हैं तब वे एकदम से फुर्र हो जाते हैं।

पपीहा बरसात के दिनों में 'पी कहां', 'पी कहां' की आवाज लगाता रहता है। कुछ लोग इसे पानी बरसने का संकेत मानते हैं। कभी पपीहा की आवाज तेज सुनायी देती है तो कभी एकदम से कुछ देर के लिए रूक जाती है।

पपीहा का आकार कुछ-कुछ कबूतर के समान होता है। इसकी पूँछ लम्बी तथा चोंच पीली और हरी होती है। चोंच के सबसे आगे का भाग कुछ काला होता है। एक विशेष बात यह है कि पपीहे की आँखों का रंग पीला होता है। जबकि पपीहे के शरीर का ऊपरी भाग स्लेटी तथा नीचे का भाग सफेद होता है जिस पर भूरे रंग की धारियां बनी रहती हैं।

पपीहे के गले में एक छेद होता है। जैसे ही यह पानी पीता है तब पानी की अधिक मात्रा नीचे गिर जाती है। तब यह चिल्लाने लग जाता है क्योंकि इसकी प्यास पानी गिरने से बुझ नहीं पाती। उस समय इसे गुस्सा आता है।

पपीहे को छोटे फल-फूल एवं कीड़े-मकोड़े खाना पसन्द है। ❖

Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month

SANT NIRANKARI MISSION

**Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)**
**Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006**

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) -23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

सन्त निरंकारी मण्डल द्वारा नियमित रूप में प्रकाशित होने वाली

# पत्र-पत्रिकाएं

**सन्त निरंकारी**

❖ ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित होने वाली **'सन्त निरंकारी'** विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक पत्रिका है जिसमें सत्गुरु वचनामृत एवं अनुभवी लेखकों की तर्कपूर्ण रचनाएं प्रकाशित की जाती हैं।

**एक नज़र**

❖ तीन भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पाक्षिक समाचार-पत्र **'एक नज़र'** में सत्गुरु माता जी के दिव्य वचन एवं मिशन की गतिविधियों के समाचार प्रकाशित होते हैं।

**हँसती दुनिया**

❖ चार भाषाओं में छपने वाली बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी बाल मासिक **'हँसती दुनिया'** में रोचक कहानियां, ज्ञानवर्द्धक वैज्ञानिक लेख, कविताएं एवं चित्रकथाएं समाहित होते हैं।

**उपरोक्त पत्र-पत्रिकाओं की सदस्यता हेतु सम्पर्क करें : -**

**Tel. : 011-47660200 (Extn. : 862)**
**Email : patrika@nirankari.org**

## पाठकों के लिए सूचना ...

❖ क्या आपको हँसती दुनिया (हिन्दी) मासिक निरन्तर मिल रही है?

❖ पत्रिका विभाग द्वारा हर माह 22 तारीख को पत्रिका Dispatch (प्रेषित) कर दी जाती है। यदि एक सप्ताह तक भी आपको प्राप्त न हो तो कृपया–

1. अपने नजदीकी पोस्ट ऑफिस से सम्पर्क करें।
2. पत्रिका विभाग को फोन नं. 011-47660200 अथवा Help Line 011-47660360 पर सूचित करें ताकि आपको उसकी दूसरी प्रति भिजवाई जा सके।

पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कॉम्पलेक्स, बुराड़ी रोड़, दिल्ली-110009

**पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सत्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें।**